श्री समय सार

लेखक

आचार्यश्रेष्ठ कुन्दकुन्दाचार्य

अनुवादक

निरंजन जमीदार

१९८६

गीता समिति प्रकाशन
बड़ा गवला, जूनी इन्दौर
इन्दौर नगर-४५२ ०४०

मूल्य ७-०० रुपये

प्रकाशक : गीता समिति
बड़ा रावला जूनी इन्दौर
इन्दौर–४५२ ००४

मुद्रक : पुष्पकुंज प्रिंटर्स,
रूपराम नगर कॉलोनी, इन्दौर

संस्करण : प्रथम

प्रतियाँ : एक हज़ार

नाम : समय सार

अनुवादक : निरंजन जमीदार

विषय : अध्यात्म

समर्पण

अनन्तश्री विभूषित पूज्य
जगद्गुरू जयेन्द्र सरस्वती
शंकराचार्य
कांची कामकोटी पीठम्
के
श्री चरणों में सादर समर्पित

अनन्तश्री विभूषित
पूज्य एलाचार्य विद्यानन्द
मुनि महाराज

— निरंजन जमींदार

भूमिका

सिंहस्थ (संवत् २०३६ : १५ अप्रैल १९८०) के पावन अवसर पर श्री कामकोटी पीठम्, कांची के अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती की चरण-धूलि से इन्दौर पावन हुआ। उस अवसर पर गीता समिति, इन्दौर नगर द्वारा उनके कर-कमलों से सभी धर्माधिपतियों को महावस्त्र प्रदान किये गये थे।

चूंकि कार्यक्रम रात में था इसलिए आदरणीय जैन मुनिश्री का महावस्त्र श्री रसिकलाल तुरखिया, भूतपूर्व महासचिव, गीता समिति ने ग्रहण किया था। वे जैन हैं।

धर्म के इतिहास में यह एक ऐतिहासिक घटना है। इसमें दोनों पूज्य विभूतियों की महानता दीखती है।

"गीता समिति" पर श्रद्धेय जैन मुनियों की हमेशा कृपा रही है।

कुछ वर्ष पहले (१९७०) जब मैं अनंतश्री विभूषित पूज्य एलाचार्य विद्यानन्द मुनिश्री को गीता समिति द्वारा प्रकाशित श्रीमद् भगवद् गीता का मेरे द्वारा किया गया मालवी बोली में अनुवाद सादर भेंट करने गया तब उन्होंने आनन्द व्यक्त किया और जब मैंने पूज्य मुनिश्री से जैनधर्म के किसी ग्रन्थ का मालवी बोली में अनुवाद करने की इच्छा प्रगट की तो उन्होंने कृपा कर "समय-सार" जैसी महान् रचना का अनुवाद करने के लिए सानन्द आशीर्वाद दिये। उन्हें इस बात से विशेष आनन्द हुआ कि मैं ब्राह्मण कुलोत्पन्न हूँ। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। उनकी कृपा बनी रहे यही याचना है।

अनुवाद-कार्य पूज्य मुनिश्री के आशीर्वादों से ही संभव हुआ। माननीय पं. नाथूलालजी शास्त्री, मित्रवर डॉ. नेमीचन्दजी, श्री प्रेमचन्दजी तथा

श्री रत्नेश कुसुमाकर ने इसे अच्छा माना। श्री बाबूलालजी पाटोदी ने इसे स्नेह दिया।

दन्तकथा है कि प्रातःस्मरणीय अनन्तश्री विभूषित भगवत्पाद आदि शंकराचार्य जब ओंकारेश्वर से महाकालेश्वर पधारे तब उन्होंने इन्दौर की पहाड़ियों को धर्म-परिसर नामाभिधान दिया और बीज-मंत्र की स्थापना कर बीजासन घोषित किया। उसी धर्म परिसर की दूसरी पहाड़ी पर सदियों बाद भगवान् बाहुबली की प्रतिमा की प्रतिष्ठा हो यह मानव-धर्म की महान् उपलब्धि है। बीजासन और भगवान बाहुबली के उपदेशों की शाश्वतता का यह ज्वलंत प्रमाण है।

इस महान समारोह में इस अनुवाद का प्रकाशन मेरे लिए परम सौभाग्य का विषय है।

मित्रवर डॉ. नेमीचन्दजी ने इसके प्रूफ देखे यह उनकी मैत्री का परिचायक है। मैं उनका आभारी हूँ।

"गीता समिति" ने इसका प्रकाशन-व्यय उठा कर मुझे उपकृत किया है।

श्री शैलेन्द्र जोशी और पुष्पकुंज प्रिन्टर्स के सहयोगियों ने जिस लगन से इसे मुद्रित किया उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

अनुवाद में त्रुटियाँ हुई होंगी। मैं पाठकों से अनुरोध करूँगा कि वे उन्हें बतलायें। मैं उनका आभार मानूँगा। त्रुटियों के लिए क्षमा चाहता हूं।

सभी के श्रीचरणों में सादर सस्नेह अभिवादन।

बड़ा रावला, इन्दौर नगर.
बसंत पंचमी, संवत् २०४२
१३, फरवरी, १९८६

निरंजन जमींदार

अनुक्रमणिका

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्न कुरू में देव, सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

मंगलं भगवदो वीरो, मंगलो गोदमो गणी ।
मंगलं कोण्डकुंदाई जेण्ह धम्मोत्थु मंगलम् ॥

[तीर्थंकर महावीर मंगलरूप है। गणधर गोतम रिसी मंगल सुभ आतमा रूप है। कुन्द कुन्द ओर दूसरा आचार्य (गुरुनां) मंगल से भर्या है इका लिये सारी दुनिया की बड़ी आतमानां को जेन धरम मगल (सुभ) करने वालो है।]

उपदेस

हे बडभागी जीवनां ! हूं तमारे हमेसा रेंने वाली कबी नी डिगनेवाली पांचवी गति (जीव की गति) [जो सबसे बड़ी हे ओर जो कोई बी दूसरी चीज से बतई नी जई सके] के पोंच्या हुआ सारा सिद्धनां (पोंच्या हुआ लोग) के नमस्कार करी के जिननें खाली सुन्यो हे असा केवलीनां (मुनीनां) ने कियो हुओ अबी का जीवनां के कूंगा।

१—१॥१॥

❀

पढमो जीवाधियारो

(अध्याय पेलो)

(स्व-समय (जीव) ओर पर समय (जीव) का लक्खननां)

१--२॥२॥

जो जीव सुद्ध दरसन (आतमा की बात) ग्यान ओर अच्छी भली जिन्दगी बितावे हे उखे निस्चे से स्वसमय (जीव) जानो। ओर जो जीव पुद्गल द्रव्य का काम करने की जगा में ठेर्यो हे उखे परसमय (जीव) जानो। [जो जीव आतमा को आसरो लेवे हे उनखे स्वसमय [जीव] केवे हे। अरहन्त ओर सिद्ध (पोंच्या हुआ लोग) ये स्वसमय (जीव) केवाय हे। जीव जब तक मोह (भरम) ओर गुण (तीन गुन-सत, रज तम) में रेवे हे उखे परसमय (जीव) केवे हे।

१--३॥३॥

एक बात के निस्चे से जानी के सुद्ध आतमां याज दुनिया में सभी दूर अच्छी देखाय हे। इका लिये या एक में बांदने की बात (कथा) दूसरो मतलब (अरथ) बतानेवाली हुई जाय हे। (जीव अपनां खुद का भाव में रेने परज सोबा देवे हे।)

१—४॥४॥

काम याने छूनं ओर खाने की इच्छा, भोग याने सुंगनं देकनं ओर सुननं, ये पांच इन्द्रियना मे जीव बंद्यो रेवे है। ये जीवनां की मारी बातनां सुनी हुई है इनखे अपन जानां हां ओर ये अपना बेवाट मे वी अई हुई है। खाली लगावनां (रागादि) से अलग सब से एक जसो होनूं (एकत्व) सेज नी है।

१—५॥५॥

(आचार्य कुन्द-कुन्द केवे है कि) आतमा का वडापन के हूं एक रूप (एकत्व) ओर अलग हुआ रूप (विभक्त) मे बताऊं हूं। जो हूं बतऊंगा उखे सच्चो मानजो। अगर हूं कई चूकी जऊं तो उको गलत मतलब मत निकालजो।

१—६॥६॥

जो जानने को भाव है, मतलब है वो नी तो सीदो है ओर नी पागलपना जसो गडबड है। उखे सुद्ध केवे है ओर जो जान्यो जाय है वो तो जानने वालोज है।

१—७॥७॥

जाननेवाला ग्यानी लोगनां की जिन्दगी ओर बेवार, दरसन (आतमा की बात) ओर ग्यान येतीन भाव बेवार की नीति (नय) केवाय है। ठेरी हुई नीति नी तो ग्यान है, नी जिन्दगी (बेवार) है ओर नी दरसन (आतमा की बात) है। वा तो सुद्ध जानने को भाव है।

१—८॥८॥

जसे बुरा लोगनांखे उनकी बुरी बोली का बिना समजायो नी जई सके हे उनी तरे बेवार नीति का बिना आतमा की बड़ी बातनां को उपदेस नी दियो जई सके हे।

१—९॥९॥ ओर १—१०॥१०॥

जो जीवनां सच्ची में भाव से सुनी खाली सुद्ध आतमा के जिन्दगी में पावे हे उनखे दुनिया में उजालो फेलाने वाला रिसी (ऋषि, बड़ा साधु) ओर स्रुत केवली (खाली सुनने वाला) केवे हे।

जो जीव सारा सुन्या हुआ ग्यान के जाने हे उसे जिनदेव स्रुत केवली केवे हे। इकी वजे या हे कि सारो सुन्यो हुओ ग्यान आतमाज हे। इका वास्ते उके स्रुत केवली केवे हे।

१—११॥११॥

रिसीनां (पोंच्या हुआ लोगनां) बेवार नीति के अभूतार्थ (जो दुनिया से अलग हे) ओर सुद्ध नीति के भूतार्थ (दुनिया का मतलब) केवे हे। जो जीव भूतार्थ (दुनिया का मतलब) को आसरो लेवे हे वो निस्चे से सम्यग्दृष्टि (बरावर देखने वालो) हे।

१—१२॥१२॥

सुद्ध (पवित्तर) आतम भाव के देखनेवाला जबे सुद्ध द्रव्य (चीज) की बात करे हे वे सुद्ध नीति-निस्चे नीति जानने का लायक रेवे हे। ओर जो जीवनां असुद्ध भाव में रेवे हे उनका लिये बेवार नीति को उपदेश किया गयो हे।

१—१३॥१३॥

सुद्ध निस्चे में जीव, अजीव, पुन्न, पाप, आस्रव ओर संवर, निर्जरा, बन्ध ओर मोक्ष ये नऊ पदार्थ से जान्या जावे है। इनखे सम्यक्त्व केवे है। (इन नऊ पदार्थ नां खे कोई मुनीजी से समजनूं चईये)

१—१४॥१४॥

जो नीति, सुद्ध आतमा खे बंधी हुई नी जाने है, दूसरा से छूई नी जाई सके है, दूसरापन से अलग है नियत याने जो चले नी है ओर ठेरी हुई बी नी है, ग्यान ओर दरसन खे अलग नी जाने है ओर दूसरा का सजोग से अलग है असा छ भावनां खे (आतमा में) देखे उखे सुद्ध नीति समझो।

१—१५॥१५॥

जो आतमा (यां जीव) आतमा खे अबद्ध (बिना बंधन की), अस्पृष्ट (बिना छुई हुई), अनन्य (बिना दूसरी बात में लगी हुई), अविशेष (खास तरे को नो होनूं), निरंश—अखंड (बिना टुकडा की, पूरी) ओर परम शान्त (पूरी तरे से सांत) भाव सेज ठेरी देखे है, जाने है, अनुभव करे है (जिन्दगी में पावे है) वाज आतमा सारा जिन धरम स्व-समय (जीव) ओर परसमय (जीव) के जाने है।

१—१६॥१६॥

साधु खे सम्यदरसन (ठीक ठीक आतमा की बात), ग्यान ओर चारित्र (अच्छी जिन्दगी) की हमेसा उपासना करनी चईये। इन तीनी बातनां के निस्चे नीति से एकज समझो।

१—१७॥१७॥ और १—१८॥१८॥

जसे कोई पइसा चाने वालो मनक राजा के (छत्तर, चंवर और दूसरी बडी बातनां) से पेचानी जाय हे और श्रद्धा (सिरधा) निश्चे करे हे, ओर फिर कोसिस से उनकी सेवा करे हे उनी तरे मोक्ष चानेवाला मनक ने जीव के राजा की नरे समजी के सिरदा से सेवा करनी चईये। उकाज पीछे चलनं चईये ओर जिन्दगी में लानू चईये।

१—१९॥१९॥

जब तक इनी आतमा के द्रव्य करम, भाव करम ओर सरीर का नो करमना में "यो हूं हूं" ओर "म्हारा मे करम ओर नो करम हे" असो अकल रेवे हे तब तक उनी आतमा के ग्यान नी होवे हे।

१—२०॥२०॥, १—२१॥२१॥ ओर १—२२॥२२॥

अपनां से दूसरा जो लुगई, बेटा ओर नाता गोता का रेवे हे, चेतन (जिन्दा) हे, पईसा, अनाज असा जड पदारथ ओर गांव सेर असी बस्तीनां, चेतन (जिन्दा) अचेतन (जड) हे इनका बारा में असो सोचें की "ये हूज हूं" "हूं इनको हूं" "यो म्हारो हे" "यो पेला म्हारो थो" "पेला म्हारो वी योज रूप थो" 'आगे वी यो म्हारो होगा" इनी तरे की खुद से जो झूठी बातनां करे हे वो अग्यानी (मूरख) केवाय हे ओर जो खास अरथ के चीज का रूप जाने हे ओर असो झूठो सोंच विचार नी करे हे वो ग्यानी आतमा भीतर हे।

१—२३॥२३॥, १—२४॥२४॥, १—२५॥२५॥

अग्यान से जिकी बुद्धि भरमई गई हे जो झूठा लगावनां का भाव से जुडयो हे असो जीव केवे हे कि सरीर से बन्ध्यो ओर सरीर

मे अलग लुगई बेटा ओर दूसरा पुद्गल द्रव्य (चीज) म्हारा हे। अगर मारा ग्यान के जानी के देखा तो जो हमेसा काम में आने का लखन वालो जीव हे वो केवे कि यो पुद्गल द्रव्य म्हारो हे । यो कसे हुई सके हे ? पन अगर जीव योज पुद्गल द्रव्य वनी जाय ओर पुद्गल द्रव्य को जीवज मिली जाय तो फिर वो यो की सके हे कि यो पुद्गल द्रव्यम्हारो हे ।

१—२६॥२६॥

(कई मूरख चेला केवे हे कि) अगर जीव सरीर नी हे तो तीर्थंकर ओर आचार्य की अस्तुति करनी झूठी बात हुई जावेगी। इका लिये सरीर योज आतमा हे ।

१—२७॥२७॥

[आचार्य (गुरु म्हाराज) चेला के समजावे हे। बेवार नीति केवे हे कि जीव ओर सरीर एकज हे ओर निश्चे नीति को यो केनूं हे कि जीव ओर सरीर कदी एक नी होवे हे ।

१—२८॥२८॥

जीव से अलग इना पुद्गल रूप सरीर की अस्तुति करने वाला मुनि असो माने हे कि म्हने खाली भगवान की अस्तुति ओर बिनती की हे, पराथना हे ।

१—२९॥२९॥

या अस्तुति निश्चे नीति से ठीक नी हे क्यूं कि सरीर का गोरा सांवला रंग का गुनना केवली भगवान का नी होवे हे। जो केवली

भगवान का गुननां की अस्तुति करे हे वे खास बड़ा अरथ से केवली भगवान की अस्तुति करे हे ।

१—३०॥३०॥

या बात असी हे कि सेर की बातनां बनाने पे बी राजा की बात नी होवे हे । इनी तरे सरीर का गुननां की अस्तुति करने पे केवली भगवान की अस्तुति नी होवे हे ।

१—३१॥३१॥

जो इन्द्रियनां के जीतो के ग्यान का सुभाव मे आतमा के बडो समजे हे, जो मनक निश्चे नीति में रेने वालो साधु हे उनने निश्चे से इन्द्रियनां जीती ली हे ।

१—३२॥३२॥

जो साधु भरम (मोह के जीती के ग्यान का सभाव (स्वभाव) से आतना के जाने हे उना साधु के परमार्थ (बड़ा मतलब के जानने वाला पेला का आचार्य (अकल वाला गुरु) मोह विजेता याने भरम (मोह) के जीतनेवालो केवे हे ।

१—३३॥३३॥

जिना साधु ने मोह (भरम) जीती लियो हे उको मोह (भरम) कमजोर हुई जावे हे तबे निश्चे के जानने वाला उना साधु के निश्चे क्षीण मोह (कमजोर भरम वालो) केवे हे ।

१—३४॥३४॥

यतः (यो सबद को अरथ) सब भावनां को "पर" (उधर)

हे असो समजी के छोडी देवे हे। इनी वजे से प्रत्याख्यान ग्यानज हे असो विचार समजनूं चईये।

१—३५॥३५॥

जसे दुनिया में मनक दूसरा का धन के अपनोनी हे असो। समजी के छोडे हे उनी तरे ग्यानी मनक दूसरा भाव नां के ये दूसरा भाव हे असो समजी के छोडी देवे हे।

१—३६॥३६॥

जो असो माने हे कि मोह म्हारो कई नी हे पन एक खाली देखने लायक रूप हूं ज हूं। इनी तरे का जानने के सिद्धांत या आतमा के जानने वाला पेला हुआ आचार्यनां मोह (भरम) से निर्ममत्व (अपना ओर दूसरा से लगाव ममता नी रखनूं) केवे हे।

१—३७॥३७॥

जो असो जाने हे कि धरम ओर दूसरा द्रव्य निश्चे से म्हारा नी हे। एक ग्यान ओर देखने का लायक रूपज हूं। इनी तरे जानने का सिद्धान्त या आतमा के जानने वाला पेला हुआ आचार्यनां धरम द्रव्य से निर्ममत्व केवे हे।

१॥३८॥३८

[ग्यानी आतमा यो जाने हे कि) हूं एक हूं, निश्चे से सुद्ध हूं, दरसन यो ग्यान से भर्‍यो हे, हमेसा बिना रूपवालो हूं। कोई बी दूसरो द्रव्य रत्ती भर बी म्हारो नी हे।

यो पेलो "जीव" अध्याय खतम हुओ।

१३ जुलाई १९७९ — इति सुभम्

दूदियो जीवाजीवाधियारो

(दूसरो अध्याय)

२॥१॥३९; २॥२॥४०; २॥२॥४१, २॥२॥४२, २॥२॥४३

आतमा के नी जानते हुए, पर (दूसरो) द्रव्य आतमा के केने वाला मूरख अग्यानतो लगावनां और कोससनां (अध्यवसान) के और करम (कारज काम) के जीव केवे हे। ओर दूसरा लोग लगावनां की कोसिस में तेजी, धीमोपन छोटा बडा का भेद (तारतम्य) रूप सक्ति माहात्म्य (बडो पन) के जीव माने हे। भोत सा लोग नो करम, सरीर ओर दूसरी चीजनां के जीव समझे हे। दूसरा लोग करम का जगने के जीव केवे हे। कई लोग तो तेजी ओर धीमापन का गुननां से पेदा हुआ भेद के जीव माने हे। इनी तरेज करम का छोटा भागनां के जीव मानने वाला लोग हे। कोई, जीव ओर करम की मिली हुई चीज के जीव माने हे। दूसरा लोग करम का संजोग के जीव माने हे। इनी तरेका ओर दूसरा भोत तरेका मूरख लोग पर (दूसरा के) आतमा केवे हे। असा एकान्त वादी लोग परमार्थवादी नी हे। या बात निश्चे से जानने वालानां ने की हे।

२॥६॥४४

पे पेल्हा कीया हुआ कोसिस ओर दूसरी बातनां सारा भावनां पुद्गल्ल द्रव्य से पेदा हुआ हे। या बात केवल्ली जनेन्द्र भगवान ने की हे। असो कर्म कई जयो सके हे कि वे जीव हे ?

२॥७॥४५

जिनेन्द्रदेव केवे हे कि आठ तरेका सारा करमना पुद्गल्ल से भव्या हे। असो कयो जाय है कि सब के मालम असो जो दुख हे वो पक्यो हुओ करम हे। वो सामने आवे हे।

२॥८॥४६

जिनेन्द्रदेवनां ने जो यो उपदेश दियो हे क ये सारा कोसिस ओर दूसरा भाव जीव केवाय हे वो बेवार नीति की तरे से कियो हे।

२॥९॥४७, २॥१०॥ ४८

फोज का झुंड के जाते देखी के "राजा निकल्यो" असी बात जो केवा हां वा बेवार नीति की तरे से होवे हे। सच्ची में तो वां एकज राजा निकल्यो हे। इनी तरेज जीव से अलग कोसिस आदि भाव जीव हे। परम आगम (सास्तर) में इखे बेवार कियो गयो हे पन निश्चे नीति यो राग ओर दूसरी चीजनां को नवीजो जीव एकज हे।

२॥११॥ ४९

जिमें रस नी हे, जिको रूप नी हे, जिमें बास नी हे इन्द्रियनां जिखे जानी नी सके हे, चेतना का गुन से पूरी भरी हे, आवाज से

अलग हे जो कोई निसानी ओर इन्द्रिय से समज में नी आवे. जिको आकार बतायो नी जई सके उखे जीव समजनं चईये ।

२,॥१२॥५०, २॥१३॥५१, २॥१४॥५२, २॥१५॥५३

२,॥१६॥५४, २॥१७॥ ५५

जीव को रंग नी हे, बास नी हे, रस नी हे, उखे छूं भी नी हुई सके, रूप नी हे, आकार नी है संहनन (गुंदयो हुओ मिल्यो हुओ ठोस बन्यो) बी नी हे । जीव के लगाव नी हे, जलन नी हे, भरम नी हे आसरो बी नी हे। करम बी नी हे, नो करम बी नी हे, जीव की जात नी हे वर्गणा (. .) ना हे उको स्पर्धक (होड़ाहोडी करने वालो) नी हे । वो अध्यात्म की जगा नी हे ओर अनुभाग की जगे बी नी हे । जीव का योग की जगे नी हे, बंधने की जगे नी हे उगने की जगे नी हे, रस्ता की जगे ना हे । जीव को स्थिति बंध स्थान नी हे संकलेश स्थान (गेरा दुख की जगे) नी हे, विशुद्धिस्थान नी हे, संयम लब्धिस्थान भी नी हे ओर जीव स्थान बी ना हे ओर जीव को गुणस्थान भी नी हे । इकी वजे या हे कि ये सब पुद्गल का बदलता हुआ रूप (परिणमन Transformation) हे ।

२॥१८॥५६

ये वर्ण (रंग, जात) से ली के गुन की जगे तक भाव बेवार नीति से जीव का होवे हे पन निश्चे नीति का मत में उनमें से कोई बी जीव को नी है ।

२॥१९॥५७

ये रंग जात ओर दूसरा भावनां का माथे जीव को नानो दूध ओर पानी का सम्बन्ध जमो हे। या बात विचार से जाननी चईये। ये रंग जात ओर दूसरा भाव जीव का नी हे क्योंकि जीव काम में आने का गुन से भज्यो हे।

२॥२०॥५८, २॥२१॥५९, २॥२२॥६०

रस्ता में कोई से लुटनो हुओ देखी के संसारी लोग केवे कि यो रस्तो लुटयो जावे हे पन कोई रस्तो थोडीज लुटे हे (राहगीरना लुटे हे) इनी तरे जीव करम ओर नो करम की जात रंग देखी के जीव की जात रंग हे असो जिनेन्द्र देव ने बेवार नीति से कियो हे। उनी तरे बास, रस, छून, रूप सरीर ओर जो आकार (संस्थान) आदि जीव का हे वे सब बेवार में निश्चे में देखने वाला बतावे हे।

२॥२३॥६१

दुनिया में दुनियादारीवाला जीवनां का जात का भाव रेवे हे दुनिया से छुटया हुआ जीवनां की कोई जात नी रेवे हे।

२॥२४॥६२

जीव के जात का साथ घुल्यो – मिल्यो मानने वालानां के समजावे हे : अगर तू ये सारा भावनां के सच्ची में जीव माने हे तो थारा मत में जीव ओर अजीव में कोई फरक नी हे।'

२॥२५॥६३, २॥२६॥६४

अगर मारा मत में दुनिया का जीवनां की जात आदि घुली-मीली हे तो इनी वजे से दुनिया का जीवनां रूपीपना केज पोंची गया।

हे मूरख ! रूपित्व लक्खन पुद्गल द्रव्य कोज होने से पुद्गल द्रव्य जीव केवायो ओर निर्वाण (मोक्ष) मिलने पे पुद्गलज जीवपन के पोंचे हे।

२।२७॥६५, २॥२८॥६६

एक इन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, बाहर पूरी की पूरी ओर इनसे अलग छोटा ओर कमीवाला जीव ये नाम करम की प्रकृतिनां हे। इन करणभूत प्रकृति पुद्गल से पेदा हुई हे। उनसे जीव बनाया गया हे। फिर इनसे किनी तरे जीव का ?

२॥२९॥६७

जो पूरा ओर कमीवाला, जो छोटा ओर बाहर जीव किया गया हे वे सरीर नी हे पन जीव का नाम हे ये सब परम आगम (मास्तर) में बेवार नीति से की गई हे।

२।३०॥६८

जो ये गुन की जगे हे ये मोह में फंसानेवाला करम का उगने से बनाया गया हे। जो हमेसा रेने वाला अचेतन किया जावे हे वे किनी तरे जीव किया जई सके हे ?

इति शुभम्

१३ जुलाई १९७९

तिदियो कत्तिकम्माधियारो

[तीसरो अध्याय]

३॥१॥६९, ३।५।।७०

जब तक जीव आतमा ओर आस्रव इन दोई का अलग-अलग लक्खन और फरक के नी जाने हे तब तक वो अग्यानी गुस्सा और दूसरा आस्रवनां में लग्यो रेवे हे । गुस्सा ओर दूसरा आस्रव में लग्या रेने मे उका करमनां इकट्ठा होवे हे सर्वज्ञ (सब जानने वाला) देवनां ने यो बतायो हे कि इनी तरे मे यो जीव को करम बन्ध हे ।

३॥३॥७१

जबे जीव आतमा और आस्रवनां का अलग अलग लक्खन ओर फरक जानी लेवे हे तबे उके कर्म बंध नी होवे हे ।

३॥४॥७२

आस्रवनां को गंदोपनो उनको अलग भाव ओर उनकी वजे से दुख होय हे यो समजी के जीव उनसे निवृत्ति करे हे, छोडे हे ।

३॥५॥७३

(ग्यानी मनक विचार करे हे कि) हूं निश्चे एक हूं, सुद्ध हूं, अपनापन का भाव (ममत्व) से अलग हूं और ग्यान दरसन से भर्यो

हूं। (ये लक्खननां से पूरा) सुद्ध आतमा रूप में रीके ओर सेज आनंद रूप से एक बन्यो हूं इन सात आस्रवनां को (गुस्सो ओर दूसरी बातनां) नास करू' हूं।

३॥६॥७४

ये गुस्सा ओर दूसरा आस्रवना जीव से बध्या हे, चंचल हे हमेसा नी रेनेवाला हे ओर सरन नी दी सके हे। बचाई नी सके हे। ये दुःख रूप हे ओर दुःख रूप फल देवे हे। यो समजी के (ग्यानी) आस्रव नाखे छोड़े हे।

३॥७॥७५

जो आतमा इना करम का नतीजा के, ओर इनी तरेन नो करम का नतीजा के नकारे हे पन जो जाने हे वो ग्यानी हे।

३॥८॥७६

ग्यानी भोत तरे से पुद्गल से पैदा करमना के जानतो हुओ बी निश्चे से परद्रव्य सरीकी बातनामें नी तो उन रूपनां से खनम (परिणमन Ended) करे हे नी उनके लेवे हे ओर नी उनको (उन) रूप पैदा होवे हे।

३॥९॥७७

ग्यानी भोत तरेमे अपना नतीजानां के जानतो हुओ बी निश्चे से परद्रव्य जसी बातनां के नी तो खनम करे हे ओर नी उनके लेवे हे और उनको (उन) रूप बी पैदा नी होवे हे।

३॥१०॥७८

ग्यानी पुद्गल से पैदा हुआ अनंत (जिनकी गिनती नी हुई सके) फल के जानतो हुओ बी निश्चे से परद्रव्य जसी बातनां में नी

तो खतम होवे हे ओर नी नी उनसे लेवे नी उनको (उन) रूप पेदा होवे है।

३॥११॥७९

पुद्गल द्रव्य भी परद्रव्य जसी बातना में उना रूप में नी न खतम होवे हे, नी उनके लेवे हे ओर नी उनका (उन) रूप पेदा होवे हे। इकी वजे या हे कि वो अपना भावमेंज खतम होवे हे।

३॥१२॥८०, ३॥१३॥८१, ३॥१४॥८२

पुद्गल जीव का (लगाव आदि) नतीजा की वजे से करम रूप में खतम होवे हे। इनी तरे जीव बी पुद्गल करमको वजे से खतम होवे हे। जीव करम का गुनना के नी करे हे। इनी तरेज करम जीव का गुनना के नी करे हे। पन ये एक दूसरा की वजे से इन दोई नतीजा ना के जानो इनी वजे से आतमा अपनांज भावना से कर्ता (करने वालो) हे पन पुद्गल करम में कर्‍या गया सारा भावना को करने वालो नी हे।

३॥१५॥८३

(निश्चे नीति को असो मत हे कि) आतमा अपनां खुद केज करे हे ओर फिर आतमा अपनांज केज भोगे हे असो तू समज।

३॥१६॥८४

बेवार नीति को मत हे कि आतमा भोत तरे से पुद्गल करमनां के करे हे ओर बे भोत तरेका का पुद्गल करमनांज भोगे हे।

३॥१७॥८५

अगर आतमा इना पुद्गल करम के करे है और उखेज भोगे है तो ये दोई बातनां एक दूसरा से अकरा नी देखाय है। असो लगने लगे है। असो माननूं जिनेन्द्र देव का मत का खिलाप (विरुद्ध) बात है।

३॥१८॥८६

क्यों कि (इकी वजे या है कि) आतमाज आतमा का भाव के ओर पुद्गल का भाव के करे है । असो मानना मे दो किरियावादी (ये दो क्रियावादी असो माने है कि एक द्रव्य का नतीजा होवे है) को देखने को तरीको गलत (झूठो) है।

३॥१९॥८७

फिर झूठोपन दो तरे को होवे है जीव को झूठोपन (जीव मिथ्यात्व) ओर अजीव को झूठोपन (अजीव मिथ्यात्व)। इनी तरे अग्यान, हमेसा लग्यो होनूं (अविरति) योग, मोह ओर गुस्सो ओर दूसरा कसाय (विकार) ये सब भावनां दो तरेका होय है।

३॥२०॥८८

जो झूठोपन (मिथ्यात्व) योग अविरति ओर अग्यान अजीव है। ये पुद्गल करम है ओर जो अग्यान अविरति ओर झूठोपन (मिथ्यात्व) जीव है वे उपयोग रूप है।

३॥२१॥८९

मोह मे जुड्या उपयोग का समय का पेला मे (अनादिकाल)

तीन ननीजा है । इना नीन झूठोपन (मिथ्यात्व) अग्यान ओर अविरतिभाव के ममजनू चईये ।

३।।२२।।९०

इन तीनो की वजे मिलने पे बी आतमा को उपयोग (काम में लानू) [निश्चे नीनि की तरे मे] सुद्ध, निरंजन ओर एक भाव है । फिर बी नीन तरेका ननीजावालो यो उपयोग जिना विकारी भाव के करे है वो उना भाव के करे हे ओर वोज उना भाव के करने वालो है ।

३।।२३।।९१

आतमा जिना भाव के करे हे नो उना भाव को करने वालो होवे हे । उका करने वाला होने पर पुद्गल द्रव्य करमरूप में खतम होवे हे ।

३।।२४।।९२

दूसरा के अपना रूप में बनातो हुओ और अपना के दूसरा रूप में बनातो हुओ वो अग्यानी जीव करमना के करने वालो होवे हे ।

३।।२५।।९३

जो "पर" के अपना सरीको नी बनावे ओर जो खुद के बी "पर" (दूसरा) नी करे वो ग्यानी जीव करमना को करने वालो नी होवे ।

३।।२६।।९४

यो (मिथ्यात्व, अग्यान ओर अविरति रूप) तीन तरेका उपयोग "हूं गुस्सो हूं" असो आत्मविकल्प (आतमा से सोचे) करे हे। या आतमा उन्ना उपयोग रूप अपना भाव के करनेवाली होवे हे।

३।।२७।।९५

यो तीन तरेका उपयोग "हूं धरम आदि हूं" असो आतमा में सोचे हे। या आतमा उना उपयोग रूप अपना भाव के करने वाली होवे हे।

३।।२८।।९६

इनी तरे अग्यानी (मोटी अकल वाला) अग्यान भाव में परद्रव्यनां के अपनो रूप करे हे ओर अपना के बी पररूप करे हे।

३।।२९।।९७

उपर की वजे मे निश्चे के जानने वाला ने वह करने वालो हे (असो कियो हे)। इनी तरे जो सच्ची जाने हे वो सब कर्त्तृत्व (काम करने का भाव) छोडी देवे हे।

३।।३०।।९८

बेवार से दुनिया में घडो, कपडो, रथ ओर दूसरी चीजनां के ओर इन्द्रियनां के कई तरे का गुस्सो आदि करमनां के ओर सरीरादि नो करमनां के करे हे।

३॥३१॥९९

अगर वा आतमा परद्रव्यनां के करे तो नियम (नेम) से वा घुलीमिली जाय है। परद्रव्यज बनी जावे है। क्यों कि वा घुलेमिले नी है इकी वजे से वा करता नी है।

३॥३२॥१००

जीव घड़ा के नी बनावे है ओर नी कपड़ा के बनावे ओर नी बाकी द्रव्यनां के बनावे है। जीव का योग ओर उपयोग घड़ा आदि बनाने में निमित्त (वजे) है। उनां योग ओर उपयोग को करने वालो जीव है।

३॥३३॥१०१

जो ग्यान ढांकनू (आवरण) आदि पुद्गल द्रव्य का नतीजा है उनके जो आतमा नी करे है पन जो जाने है वो ग्यानी है।

३॥३४॥१०२

आतमा जिना अच्छा या बुरा भाव के करे है वा उना भाव की निश्चे ही करने वाली होवे है। यो भाव उकी करम होवे है ओर आतमा उना भावरूप करम के भोगे है।

३॥३५॥१०३

जो चीज जिना द्रव्य ओर गुन में रेवे है वो दूसरो द्रव्य (ओर गुन) मे नी जावे है। दूसरा (द्रव्य ओर गुन) में नी जाते हुए वा चीज उना द्रव्य के किनो तरे बदल (परिणमन) सके है ?

३॥३६॥१०४

आतमा पुद्गलमय करम में द्रव्य ओर गुन में नी जावे हे। उनें द्रव्य ओर गुण दोई से परे नी जाती हुई वा उना पुद्गल करम को करने वाली किनी तरे हुई सके हे ?

३॥३७॥१०५

जीव का निमित्त भूत (वजे) होने पे ग्यान आवरण (ढांकनू) आदि बन्ध (बांदनू) परिवर्तन (परिणमन) होतो देखी के "जीव ने करम (काम) कर्यो" अमो देखने का ढंग से कियो जावे हे।

३॥३८॥१०६

सिपई लडई करे हे पन "राजा" ने लडई की अमा लोग केवे हे। इनी तरे ग्यान। आवरण आदि करम जीव ने किया यो बेवार में कियो जावे हे।

३॥३९॥१०७

बेवार नीति केवे हे कि आतमा पुद्गल द्रव्य के पेदा करे हे काम करे हे, बांदे हे, बदले (परिणमन) हे ओर लेवे (ग्रहण) हे।

३॥४०॥१०८

जिनी तरे राजा (परजा में) दोस ओर गुन पेदा करने वालो हे अमो बेवार में कियो जावे हे। उनी तरे जीव बेवार में द्रव्य ओर गुन को पेदा करने वालो कियो जावे हे ।

३॥८५॥१०९; ३॥८२॥११०

सच्ची में तो चार मोटी (सामान्य) बातनां (प्रत्यय) बन्ध को करने वाली (कर्ता) की जावे हे। मिथ्यात्व (झूठोपन) अविरति कषाय ओर योग के जानने चईये ओर फिर उनका तेरा तरेका भेद किया गया हे। (ये भेद) मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोगी केवली का चरम समय (आखरी) तक हे।

३॥८३॥१११ : ३॥८४॥११२

ये मिथ्यात्व ओर दूसरी बातनां (प्रत्यय) निश्चे से अचेतन (मिथ्या) हे क्यों कि ये पुद्गल करम का उगने से पेदा होवे हे। अगर ये बातनां (प्रत्यय) करम करे हे तो करने दो. आतमा उना करमनांके भोगने वालो नी हे। ये गुनस्थान नामको प्रत्यय (बात) करम करे हे इका लिये निश्चे नीति से जीव करमना को करने वालो नी हे ओर गुनस्थान नामको प्रत्ययज करमनां करे हे।

३॥८५॥११३, ३॥८६॥११४, ३॥८७॥११५

जसो जीव को ग्यान दरसन उपयोग एकज हे उनी तरे अगर गुस्सो बी जीव से एकरूप होवे तो इनी तरे जीव ओर अजीव का एक होनं (अनन्यत्व) मिली गयो, ओर असा होने पे इना लोक में जो जीव हे वेज नियम से उनी तरे अजीव होगगा। प्रत्यय कर्म ओर नो कर्म का एकरूप (एकत्व) में बी यो दोष आवेगो या फिर गुस्सो अलग हे ओर उपयोग रूप आतमा अलग हे तो फिर गुस्सो अलग (अन्य) हे; इनी तरे प्रत्यय, कर्म ओर नो कर्म बी अलग हे।

३।४८।।११६; ३।।४९।।११७; ३।।५०।।११८; ३।।५१।।११९
३।।५२।।१२०

यो पुद्गल द्रव्य जीव मे खुद नी बन्ध्यो है और कर्मभाव से खुद परिणमन (बनना) नी करे है। अगर असो माना तो वो अपरिणामी हुई जावेगो या कार्मण वर्गणांना द्रव्यकर्मरूप में परिणमन (बदल) नी होवेगी। असो माना तो दुनिया में अभाव हुई जावेगो या सांख्य (ज्ञान) मत अई जावेगो।

जीव पुद्गल भाव के कर्मभाव मे परिणमन (बदल) करावे है—अगर असो माना तो जीव उनके कीनी तरे परिणमन कराई सके है जबे कि ये पुद्गल द्रव्य खुद परिणमन नी करे है। या यो माना कि पुद्गल द्रव्य खुदज कर्मभाव मे परिणमन करावे है तो जीव कर्मरूप पुद्गल के कर्मरूप परिणमन करावे है यो केनो झूठो हुई जावेगो। इका लिये जिना नियम से कर्मरूप में बदल्या हुआ पुद्गल द्रव्य कर्मज है। इनी तरेज ज्ञान आवरण आदि रूप परिणमित पुद्गल द्रव्य ग्यान आवरण आदिज है असो समजो।

३।।५३।।१२१; ३।।५४।।१२२; ३।।५५।।१२३; ३।।५६।।१२४
३।।५७।।१२५

[सांख्य (ग्यान) मत के मानने वालाना चेला मे गुरु केवे है कि] अगर असो मानो ला कि यो जो जीव कर्म में खुद नी बन्ध्यों है ओर गुस्सा आदि भाव में खुद परिणमन नी करे है तो इका से उके अपरिणामी माननू होगो या बात सिद्ध होवेगी। ओर गुस्सा आदि

भावरूप मे जीव के खुद के परिणमन नी करने पर दुनिया का अभाव की बात अई जावेगी या सांख्य मत अई जावेगो।

अगर यो केवां कि पुद्गल कर्मरूप गुस्सो जीव को गुस्सो भावरूप परिणमाता है तो खुद परिणमन नी करने वाला जीव के गुस्सा को रूप किनो तरे परिणमन करई सके हे ?

या फिर आतमा खुद गुस्सा का भाव से परिणमन करे हे अगर असो मारो माननूं हे तो गुस्सो जीव का गुस्सा भाव रूप परिणमन करावे हे यो केनू झूठो होगा।

इकालिये या बात ठेरी कि गुस्सा में आने वाली आतमा गुस्सोज हे। मान (अहंकार) में आने वाली आतमा मानज हे। माया में आने वाली आतमा मायाज हे ओर लोभ में आनेवाली आतमा लोभज हे।

३॥५८॥१२६

आतमा जिना भाव के करे है वा उना भाव कर्म की करने वाली होवे हे। ग्यानी के ग्यानमय भाव ओर अग्यानी के अग्यानमय भाव होवे हे।

३॥५९॥१२७

अग्यानी के अग्यानमय भाव होवे हे इनी वजे से वो करमना के करे हेओर ग्यानी के जो ग्यानमय भाव होवे हे उनी वजे से वो करमनां के नी करे हे।

३॥६०॥१२८, ३॥६१॥१२९

क्योंकि ग्यानमय भाव से ग्यानमय भाव पेदा होवे हे इनी वजे से ग्यानी का सारा भाव सच्ची में ग्यानमयज होगा । इकी वजे या कि अग्यानमय भाव से अग्यानमय भावज पेदा होगो इनी वजे मे अग्यानी का सारा भाव अग्यानमय होवे हे ।

३॥६२॥१३०, ३॥६३॥१३१

जिनी तरे सोना का भाव (किमत नी) से कड़ला ओर दूसरा भाव पेदा होवे हे ओर लोहा का भाव से कड़ा ओर दूसरा भाव पेदा होवे हे उनी तरेज अग्यानी के भोत सा अग्यानमय भाव पेदा होवे हे ओर ग्यानी का सारा भाव ग्यानमय होवे हे ।

३॥६४॥१३२, ३॥६५॥१३३, ३॥६६॥१३४

जीवनां का जो विरुद्ध (विपरीत) ग्यान हे उनके तो अग्यान को उगनो केनू चईये ओर जीव का तत्व को अश्रद्धान हे । इके मिथ्यात्व को उगनो केवे हे ओर जीव को जो अत्यानभाव हे उके असयम को उगनो केनू चईये ओर जीव को जो गंदो उपयोग हे उके कषाय को उगनो केनू चईये ओर जीव का जो सुद्ध ओर असुद्ध रूप प्रवृति रूप या निवृति रूप मन, वचन, सरीर का बेवार में उच्छाह हे उके योग को उगनू समजनू चईये ।

३॥६७॥१३५; ३॥६८॥१३६

इना मिथ्यात्व आदि का ठगनां का हेतुभूत होने पे कार्मण वर्गणानां का रूप में आयो जो पुद्गल द्रव्य हे वो ग्यान आवरण आदि

द्रव्य कर्म का रूप में आठ तरेको परिणमन करे हे। वो कार्मण वर्गणागत पुद्गल द्रव्य जब मच्ची में जीव का साथे बंधे हे उनी बखत जीव अपनां अग्यानमय परिणामरूप भावनां को कारण होवे हे।

३॥६९॥१३७, ३॥७०॥१३८

अगर जीव के पुद्गल कर्म का साथेज रागादि नतीजा होवे हे असो माना तो जीव ओर कर्म दोई रागादि भाव के पोंची जावे पन रागादि अग्यान परिणाम एक जीव केज होवे हे इका लिये करम को उगने को रूप निमित्त कारण मे अलग जीव को परिणाम हे।

३॥७१॥१३९, ३॥७२॥१४०

अगर जीव का साथे पुद्गल द्रव्य को परिणाम होवे हे इनी तरे मान्यो जावे तो पुद्गल ओर जीव दोई कर्मत्व के पोंची जाएगा। पन कर्मभाव से एक पुद्गल द्रव्य कोज नतीजो होवे हे इका लिये जीव का रागादि अग्यान परिणामरूप निमित्त कारण से अलगज पुद्गल द्रव्य कर्म को नतीजो हे।

३॥७३॥१४१

जीव में कर्म बन्ध्यो हुओ हे ओर उके छूए हे यो बेवार नीति को केनूं हे ओर जीव कर्म में बन्ध्यो नी हे ओर उके कोई छूई नी सके हे यो निश्चे नीति को केनूं हे।

३॥७३॥१४२

जीव में कर्म बन्ध्यो हे या नी बन्ध्यो हे यो तो नय पक्ष

(तर्क-नीति पक्ष) जाने ओर जो नय (नीति) पक्ष का पार जावे हे वो समयसार (निर्विकल्प शुद्ध आत्म तत्व) हे।

३॥७५॥१४३

(सुनने से ग्यान मिलई हुई आतमा) दोई नय (तर्क-नीति) का केना के खाली जाने हे वो (सहज परमानन्दैक स्वभाव) आतमा को अनुभव करतो हुओ ओर सारा नय नीति पक्ष का विकल्पना से अलग हुओ किना बी नय नीति पक्ष को थोडो बी हिस्सो नी लेवे हे। आतमानुभव (साक्षात्कार) की वखत नय (तर्क नीति) का सारा विकल्प दूर हुई जावे हे।

३॥७६॥१४४

सारा नयपक्ष से खाली मान्यो जावे हे वो समयसार हे। इना समयसार केज सम्यग्दर्शनज्ञान नाम दियो गयो हे। (समयसारज सम्यग्दर्शन ओर सम्यग्ज्ञान हे।)

इति शुभम्

१४।७।७९

चतुत्थो पुण्णपावाधियारो

(चौथो अध्याय)

४॥१॥१४५

बुरा काम बुराज रेवे हे ओर अच्छा काम अच्छाज रेवे हे इनी बात के तम समजो हो। पन जो काम जीव के दुनिया में लावे हे वो किनी तरे अच्छो हुई सके हे ?

४॥२॥१४६

जिनी तरे सोना की बेडी बी मनक के बांधे हे ओर लोहा की बेडी बी बांधे हे। इनी तरे अच्छो या बुरो काम जीव के बांधे हे।

४॥३॥१४७

इका लिये अच्छा ओर बुरा इन दोई कुशील नां का साथे लगाव मत रक्खो ओर उनमे दूरज रो क्यूं कि कुशील का साथे रेने से ओर लगाव रखने से खुद का सुख को नास होवे हे।

४॥४॥१४८; ४॥५॥१४९

जिनी तरे मनक बुरा बेवार ओर सुभाव वाला मनक के जानीके उका पास जानूं ओर उका मे लगाव रखनूं छोडी देवे हे उनी तरे स्वभाव में लग्यो ग्यानी जीव कर्म प्रकृति का शील स्वभाव के बुरो

जानी के निश्चे से उका माथ रेन छोडो देवे हे ओर (लगाव) नी रखे हे।

४॥६॥१५०

लगाव रखने वाला (रागी) जीव करमना के बांधे हे ओर लगाव नी रखने वाला (विरागी) जीव करमना से छूटे हे यो जिनेन्द्र भगवान को उपदेस हे इका लिये (हे बडा जीव!) तू करमना से लगाव मत रख।

४॥७॥१५१

निश्चे से जो परमार्थ (आतमा) हे वा समय (शुद्ध गुण पर्याय में परिणमन करने वालो) हे, सुद्ध (सारी नय (दृष्टि) पक्ष से खाली एक ग्यान सरुप होने से सुद्ध) हे, केवली (केवल मननमात्र भावस्वरूप होने से मुनि) हे; ग्यानी (खुदज ग्यानस्वरूप होने से ग्यानी) हे। उना परमात्मा स्वभाव में ठेर्या मुनिनां निर्वाण के पोंचे हे।

४॥८॥१५२

जो परमार्थ में नी ठेर्यो हे पन तप करे हे ओर बरत (व्रत) करे हे उका वे सारा तप ओर बरत (व्रत) के सर्वज्ञ देव बालतप ओर बालव्रत केवे हे।

४॥९॥१५३

बरत (व्रत) ओर नियम के ली के ओर सील (शील) ओर तप करते हुए बी जो परमार्थ से बाहेर हे (जिनके परमार्थ भूत ग्यान-स्वरूप आतमा की अनुभूति (जानकारी) नी हे) वे निर्वाण के नी पोंचे हे।

४॥१०॥१५४

जो परमार्थ मे बाहर हे (सुद्ध आत्मस्वरूप को जिनके अनुभव नी हे) वे मोक्ष (मुक्ति) का हेतु (कारन) के नी जानते हुए अग्यान से दुनिया मे रेते हुए बी (ममार गमन) कारण पुन्न (पुण्य) के चावे हे।

४॥११॥१५५

जीव आदि नो पदार्थ को श्रद्धान करनू सम्यग्दर्शन हे। उन पदार्थना को संशय (ममय), विमोह ओर विभ्रम से खाली ग्यान सम्यग्जान हे। लगाव आदि (रागादिक) के छोडनू सम्यक्चारित्र हे। योज मोक्ष को रस्तो हे।

४॥१२॥१५६

निश्चे नीति मे विषय के छोड़ी के अकल वाला लोग बेवार से प्रवृत्ति (काम) करे हे। पन निज सुद्धात्मभूत परमार्थ को आसरो लेनेवाला यतीना का कर्म नाश होवे हे।

४॥१३॥१५७; ४॥१४॥१५८; ४॥१५॥१५९

जिनी तरे मेल से भर्यो कपडा को सफेद भाव मिटी जावे हे उनी तरे मिथ्यात्वरूपी मेल से भर्यो सम्यक्त्व निश्चे मे उठी जावे हे। असो जाननूं चईये।

जिनी तरे मेल से भर्या कपडा को सफेद भाव मिटी जावे हे उनी तरे अग्यानरूपी मेल से भर्यो ग्यान उठी जावे हे। असो जाननूं चईये।

जिनी तरे मेल से भऱ्या कपड़ा को सफेद भाव मिटी जावे है उनी तरे कषाय से भऱ्यो हुओ चारित्र उठी जावे है। असो जाननूं चईये।

८॥१६॥१६०

वा आतमा (स्वभाव सेज) सर्वज्ञ ओर सर्वदर्शी है। (फिर बी वा) अपना कर्मरूपी रज (रजोगुण) से ढंकी हुई है (इनी वजे सेज) वा दुनिया में आई है। वा सारा पदार्थ के सब तरे से नी जाने है।

८॥१७॥१६१, ८॥१८॥१६२, ८॥१९॥१६३

सम्यकत्व के रोकने वालो मिथ्यात्व है असो जिनेन्द्र देव ने कियो है। उका उगने से जीव मिथ्यादृष्टि होवे है असो समजनूं चईये

ग्यान के रोकने वालो अग्यान है असो जिनेन्द्र देव ने कियो है। उका उगने से जीव अग्यानी होवे है असो समजनूं चईये।

चरित्र के रोकने वालो कषाय है असो जिनेन्द्र देव ने कियो है। उका उगने से जीव चरित्र रहित होवे है, असो समजनूं चईये।

१६-७-१९७१ इतिशुभम्

पंचमो आसवांधियारो

(पांचवो अध्याय)

५॥१॥१६४; ५॥२॥१६५

मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग (भाव प्रत्यय और द्रव्य प्रत्यय का रूप में) चेतन और अचेतन दो तरेका होवे हे। (जो चेतन का विकार हे वे) जीव में भोत तरे से भेदवाला हे और वे जीव काज अनन्य परिणाम हे। जो मिथ्यात्व आदि पुद्गल का विकार हे वे ज्ञानावरण आदि कर्म का निमित्त (कारन) हे। उना मिथ्यात्व आदि अचेतन विकारनां का निमित्त राग-द्वेष आदि भावनां को कर्ता (करने वालो) जीव होवे हे।

५॥३॥१६६

सम्यग्दृष्टि का आस्रवनिमित्तक बन्ध नी होवे हे। पन आस्रव को निरोध हे। नया करमनां के नी बांधते हुए वो सत्ता में रेनवाला पेला से बांध्या हुआ करमनां के जाने हे।

५॥४॥१६७

जीव का कर्‍या हुआ रागादियुक्त (लग्या हुआ) भाव तो नया कर्म के बांधने वाला होवे हे और रागादि से खाली भाव बांधे नी हे। वे खाली ज्ञायक (जानने वाला) हे।

५।५।१६८

जिनी तरे पक्या फल (झाड से) गिरने पे वे फल फिर डठल से नी जुडे हे उनी तरे जीव का पुद्गल कर्म निर्जरा हुई जाने पे वे उगे नी हे (फिर जीव का साथे नी बंधे हे।)।

५॥६॥१६९

उना ग्यानी का पेला मे बंध्या सारा (मिथ्यात्वादि द्रव्य) प्रत्यय तो मिट्टी का ढेरा जमा हे (अकिंचित्कर हे) और वे (अपना पुद्गलस्वभाव से) कार्मण सरीर का साथे बन्ध्या हुआ हे।

५॥७॥१७०

क्यू कि (मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग) ये चार तरेका द्रव्यास्रव ग्यान-दरसन गुनना मे प्रति समय भौत तरेका कर्मना के बांधे हे इका लिये ग्यानी तो अबन्ध हे (वो किका से बंध्यो नी हे)।

५॥८॥१७१

क्यू कि ग्यान गुण, ग्यान गुण का जघन्य (भौत बुरा) भाव (क्षायोपशमिक ग्यान) की वजे से फिर अन्तर्मुहूर्त का बाद दूसरा रूप मे परिणमन करे हे इनी वजे से वो (ज्ञान गुण का जघन्य भाव-यथाख्यात चरित्र का मिलने से पेला तक) कर्म के बन्ध कराने वालो कियो गयो हे।

५॥९॥१७२

दरसन, ग्यान और चरित्र जघन्य भाव से जो परिणमन करे

हे उकी वजे मे ग्यानी जीव भोग नरे का पुद्गल कर्म से बन्ध के मिलावे हे (पोंचे हे)।

५॥१०॥१७३, ५॥११॥१७४, ५॥१२॥१७५,
५॥१३॥१७६

सम्यग्दृष्टि जीव का पेला की मराग दसा में वान्ध्या हुआ सारा द्रव्यास्रव सत्ता में हे। वे उपयोग की तरे से कर्म भाव मे (रागादि भाव प्रत्ययना मे) बन्ध के पोंचे हे। सत्ता में रेवे हे फिर बी उगने से पेला भोग का लायक नी होवे हे। जसे छोटी उमर की ओरत (बई) आदमी (मनक) का (भोग का) लायक नी रेवे हे। वेज कर्म उगने की बखत में भोगने लायक होने पे नया कर्म के बांधे हे जसे जवान ओरत (बई) मनक का (भोग का) लायक होवे हे (ओर मनक के रागभाव से बांधी लेवे हे)। ये पूर्वबद्ध कर्म भोगने का लायक नी होवे हे जसे भोगने लायक होवे हे उनी तरे ज्ञानावरण आदि रूप से (आयु कर्म का बिना) सात तरेका ओर (आयु कर्म का साथे) आठ तरेका कर्मन के बांधे हे। इनी वजे मे सम्यग्दृष्टि जीव अबन्धक (कर्म बन्ध नी करने वाला) कियो गयो हे। रागादि भावास्रव नी रेने पे द्रव्य प्रत्यय बांधने वाला नी होवे हे।

५॥१४॥१७७, ५॥१५॥१७८

राग, द्वेष ओर मोह में आस्रव सम्यग्दृष्टि नी होवे हे। इका-लिये रागादि भावास्रव का बिना द्रव्य प्रत्यय कर्मबन्ध का कारण नी होवे हे मिथ्यात्व आदि चार तरेका हेतु आठ तरेका कर्म का कारण

होवे हे ओर इना चार तरेका हेतुनां का कारण जीव का रागादि भाव रेवे हे। इना रागादि भाव का नी रेने की वजे से सम्यग्दृष्टि के कर्म-बंध नी होवे हे।

५॥१६॥१७९; ५॥१७॥१८०

जसे मनक ने खायो हुओ खान (भोजन. अहार) पेट में जाने पे मांस, चरबी, खून आदि रूप मे भोत रूपनां में परिणमन करे हे उनी तरे ग्यानी का पेल्हा (रूप में) बंध्या जो द्रव्य आस्रव था वे भोत तरेका कर्म के बांधे हे। ये जीव सुद्ध नीति (नय) से अलग हुया रेवे हे (सुद्ध नय से अलग होने परज ग्यानी जीव रागादि भावास्रव करे हे। उकासे द्रव्यास्रव ओर कर्मबन्ध होवे हे।)

१८-७ ७२ इति शुभम्

छट्टमो संवराधियारो

(छटो अध्याय)

६॥१॥१८१, ६॥२॥१८२, ६॥३॥१८३

उपयोग में उपयोग है, गुस्सा आदि में कोई बी उपयोग नी है ओर गुस्सा में ज गुस्सो है निश्चेज उपयोग में गुस्सो नी है। आठ तरेका (ज्ञानावरणादि) कर्म ओर (शरीरादि) नोकर्म में बी उपयोग नी है ओर उपयोग में कर्म ओर नो कर्म बी नी है। जिनी बखत में जीव के अविपरीत (सत्यार्थ) ग्यान हुई जावे है तबे उपयोग स्वरूप शुद्धात्मा उपयोग का सिवा ओर दूसरा कोई भाव के नी करे है।

६॥४॥१८४; ६॥५॥१८५

जसे आग में बी तपायो हुओ सोनो अपनां सोना-स्वभाव के नी छोड़े है, इनी तरेज (तीव्र परीग्रह उपसर्गरूप) कर्मोदय से तपी के ग्यानी बी अपनां ग्यानीपन का स्वभाव के नी छोड़े है। इनी तरे ग्यानी जानें है ओर अग्यानरूप अंदेरा से ढंक्यो अग्यानी आत्मभाव के नी जानते हुए राग के ज आतमा माने है।

६॥६॥१८६

सुद्ध आतमा के जानते हुए जीव सुद्ध आतमा केज पोंचे है ओर असुद्ध आतमा के जानते हुए जीव असुद्ध आतमा केज पोंचे है।

६।।७।।१८७; ६।।८।।१८८, ६।।९।।१८९

आतमा के अपनी आतमा से पुन्न ओर पाप इन दोई सुभ ओर असुभ योगनां से रोकी के दरसन ओर ज्ञान में ठेरयो हुओ ओर दूसरा देह रागादि में इच्छा से विरत (अलग) हुओ ओर सारा बाहेर का ओर भीतर का परिग्रह से खाली हुई जो आतमा अपनी आतमा के अपनी आतमा से ध्यावे (ध्यान करे हे) हे ओर कर्म ओर नोकर्म को ध्यान नी करे हे असो गुणविशिष्ट आतमा एकत्व को चिन्तन (अनुभव) करे हे। वा आतमा अपनी आतमा को ध्यान करती हुई दर्शन ज्ञानमय (ग्यानमय) हुई के ओर अनन्यमय हुई के थोड़ी वखत में कर्मना से खाली हुई आतमा के पोंची जावे हे।

६।।१०।।१९०, ६।।११।।१९१, ६।।१२।।१९२

सर्वज्ञदेव ने (रागादि विभाव कर्म रूप) भावास्रवनां की वजे से मिथ्यात्व, अग्यान, अविरतिभाव ओर योग ये चार अध्यवसान किया गया हे। ग्यानी का हेतुनां से खाली होने पे नियम से आस्रव को निरोध होवे हे। आस्रवभाव का बिना कर्म को बी निरोध हुई जावे हे ओर कर्म को अभाव होने से तो कर्म को बी निरोध हुई जावे हे। तो कर्म को निरोध होने से दुनिया को बी निरोध होवे हे।

१८-७-१९७९ इति शुभम्

सातमो णिज्जराधियारो

(सातवाँ अध्याय)

७॥१॥१९३

सम्यग्दृष्टि जीव इंद्रियनां से अचेतन ओर चेतन द्रव्यनां को जो उपभोग करे हे वो सब निर्जरा को निमित्त हे।

७॥२॥१९४

परद्रव्यनां को (जीव से) उपभोग करने पे नियम से सुख या दुख होवे हे। (जीव) उगने पे उना सुख-दुख को अनुभव करे हे फिर वो निर्जरा के पोंचे हे (झडी जावे हे)।

जिनी तरे बेद जेर के काम में लाते हुए बी मरे नी हे उनी तरे ग्यानी मनक पुद्गल कर्म का उगने के भोगे हे फिर बी वो कर्म से नी बंधे हे।

७॥४॥१९६

जिनी तरे कोई मनक सराब के पीते हुए जोरदार अरतिभाव की ताकत से मतवालो नी होवे हे उनी तरे ग्यानी मनक द्रव्यनां का उपभोग में विरक्त रेते हुए (बेराग की ताकत से) कर्मनां से नी बंधे हे।

७।।५।।१९७

कोई सम्यग्दृष्टि (रागादि भाव से खाली होने की वजे से) विषयनां के भोगतो हुओ बी उनके सेवे (सेवन) नी हे (ओर अग्यानी मनक विषयनां में राग भाव की वजे से) उनके नी सेवी (सेवन नहीं करके भी) के बी उनके सेवे (सेवन करने वालो) हे।

७।।६।।१९८

जिनेन्द्रदेव ने कर्मनां का ऊगने का फल भोन तरेका बताया हे। वे तो म्हारा स्वभाव नी हे। हूं तो एक ज्ञायक (जानने वालो) भाव हूं।

७।।७।।१९९

राग पुद्गल कर्म हे। उनका फल का रूप में उगने से यो राग-रूप भाव पेदा होवे हे। यो तो म्हारो भावनी हे। हूं तो एक (टंकोत्कीर्ण खोद्यो हुओ) ज्ञायक भाव हूं।

७।।८।।२००

उपर की हुई तरे से सम्यग्दृष्टि अपना आपके लायक स्वभाव समझे हे ओर आतम तत्व के जानतो हुओ कर्म का उगने का विपाक से पेदा भावनां के छोडी देवे हे।

७।।९।।२०१, ७।।९।।२०२

सच्ची में जिना जीव में रागादि (अग्यान भावनां) के परमाणुमात्र (भोत थोडो सो बी) बी रेवे हे वो जीव सारा सास्तरनां

को जानने वालो होने पे वी आतमा के नी जाने हे ओर आतमा के नी जानते हुए वो अनातमा के वी नी जाने हे। इनी तरे जीव ओर अजीव के नी जानने वालो किनी तरे सम्यग्दृष्टि हुई सके हे।

७॥११॥२०३

आतमा में द्रव्य ओर भावनां का बीच में (अतत्स्वभाव में अनुभव में आनेवाला भाव) अपद हे (क्षणिक होना से आतमा को जगा नी ली सके हे) इका से उनके छोडी के नियत, स्थिर (थिर) ओर एक स्वभाव से अनुभव करने लायक इना भाव के (चैतन्य मात्र ज्ञानभाव के) लो।

७॥१२॥२०४

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान ओर केवल ज्ञान ये पांची ज्ञान एकज पद हे (एक ज्ञान नाम से जान्या जावे हे) सो यो (ग्यान) परमार्थ हे (मोक्ष को साक्षात उपाय हे) जिके पोंची के आतमा निर्वाण के पोंचे हे।

७॥१३॥२०५

ग्यानगुण से खाली भोतसा मनक (भोतसा कर्म करते हुए वी) ग्यानस्वरूप इना पद के नी पोंचे हे इका लिये जदि तू कर्मनां से छूटनूं चावे हे तो इना नियत पद-ग्यान के ले।

७॥१४॥२०६

(हे बडा !) तू इना ग्यान से हमेसा प्यार कर इमेंज तू हमेसा

संनोसी रे इमेंज तू तृप्त (भऱ्यो) रे ग्यान-रति, संतुष्टि ओर तृप्ति से) थारे उत्तम सुख मिलेगो (होगा)।

७॥१५॥२०७

अपनी आतमा को निश्चे रूप से अपना परिग्रह (के) जानतो हुओ कोन ग्यानी मनक केवेगा कि यो परद्रव्य म्हारो द्रव्य हे !

७॥१६॥२०८

अगर परिग्रह (परद्रव्य) म्हारो होवे तबे नो (चैतन्य स्वभाव वाला) हूं अजीवता के पोंची जऊं क्यों कि हूं ग्यानज हूं, इनी नरे परद्रव्यरूप परिग्रह म्हारो नी हे ।

७॥१७॥२०९

चाए छिदी जाय चाए भिदी जाय चाए कोई ली जाय या नास हुई जाय चाए कोई वजे से चल्यो जाय नो वी परिग्रह म्हारो नी हे ।

७॥१८॥२१०

जिनके इच्छा नी हे वो अपरिग्रही कियो जावे हे ओर ग्यानी धरम के—पुन्न के नी चावे हे इकालिये वो धरम को परिग्रही नी हे (पन वो) धरम को ज्ञायक हे ।

७॥१९॥२११

जिनके इच्छा नी हे वो अपरिग्रही कियो जाय हे ओर ग्यानी अधरम को पाप नी चावे हे इका लिये अधरम का परिग्रही नी हे पन ज्ञायक हे ।

७॥२०॥२१२

जिनके इच्छा नी हे वो अपरिग्रही कियो जाय हे ओर ग्यानी खाना (भोजन) के नी चावे हे इकालिये खाना (भोजन) को परिग्रही नी हे (पन वो) ज्ञायक हे।

७॥२१॥२१३

जिनके इच्छा नी हे वो अपरिग्रही कियो जाय हे ओर ग्यानी पान (पीने की चीजनां) के नी चावे हे इकालिये वो पान को परिग्रही नी हे (पन वो) ज्ञायक हे।

७॥२२॥२१४

इत्यादिक भोत तरेका सारा भावनां के ग्यानी नी चावे हे सारी दूर निरालम्ब (बिना आसरा को) वो प्रतिनियम भावज हे।

७॥२३॥२१५

वो अबी (वर्तमान काल) का कर्मोदय का भोग ग्यानी के हमेसाज वियोग बुद्धि से होवे हे ओर ग्यानी आने वाली बखत में उगने (आगे बडने) की इच्छा नी करे हे।

७॥२४॥२१६

जो अनुभव करे हे (असो वेदक भाव) जो अनुभव कर्‍यो जावे हे (असो वेद्य भाव) ये दोनो भाव । अर्थ पर्याय की अपेक्षा (जगे) बखत बखत पे नास हुई जाय हे। असो जानने वालो ग्यानी उन दोई भावनां की कबी बी आसा नी करे हे।

७॥२५॥२१७

बन्ध ओर उपभोग का निमित्त भूत दुनिया का बारा में ओर सरीर का बारा में रागादि अध्यवसाननां का उगने में (पेदा होने पे) ग्यानी के राग पेदा नी होवे हे।

७॥२६॥२१८, ७॥२७॥२१९

ग्यानी सारा द्रव्यनां में निश्चे से राग के त्यागी (छोड़ने वालो) होवे हे। कर्मनां का बीच में पडयो हुओ बी कर्म रूपी रज (धूला) से लिपटे नी हे। जिनी तरे कीचड में पडयो सोनो (कीचड से लिपटे नी हे।) फिर अग्यानी सारा परद्रव्यनां में निश्चे से रागी होवे हे: (इकालिये वो) कर्मनां का बीच में पडयो हुओ कर्मरूपी रज (धूला) से लिपटे नी हे जिनी तरे कीचड़ का बीच पडयो हुओ लोहो (कीचड-जंग से लिपटे नी हे)।

७॥२८॥२२०, ७॥२९॥२२१, ७॥३०॥२२२
७॥३१॥२२३

भोत तरे से सचित्त, अचित्त और मिल्या हुआ (मिश्रित) द्रव्यों का उपभोग करने वाला संख को सफेद भाव कालो नी कियो जई सके उनी तरे भोत सी तरेका सचित्त, अचित्त ओर मिश्रित द्रव्यनां को उपभोग करते हुए ग्यानी का ग्यान के अग्यान रूप में नी बदल्यो जई सके हे।

जबे वोज संख अपना सफेद स्वभाव के खुद छोडी के कालो भाव बने हे तबे वो सफेदपन (शुक्लत्व) छोडी देवे हे। इनी तरे ग्यानी

बी जबे अपनो ग्यान स्वभाव खुद छोडी के अग्यान रूप में परिणमित होवे हे तबे वो अग्यान भाव के पोंचे हे ।

७॥३२॥२२४; ७॥३३॥२२५, ७॥३४॥२२६
७॥३५॥२२७

जिनी तरे इना लोक में कोई मनक पेट पालने का लिये राजा की नोकरी करे हे तो वो राजा बी उके सुख देने वाला कई तरेका भोग देवे हे उनी तरे जीव पुरुष (मनक) सुख का लिये कर्मरज की सेवा (नोकरी) करे हे तो वो कर्म बी उके भोत तरेका भोग देवे हे ।

फिर जसे वोज मनक पेट पालने का लिये राजा की सेवा (नोकरी) वी करे हे तो वो राजा उके सुख देने वाला भोत तरेका भोग नी देवे हे उनी तरे सम्यग्दृष्टि (मनक) विषयनां का लिये कर्मरज की सेवा नी करे तो वो कर्म उके सुख देने वाला भोत तरेका भोग नी देवे ।

७॥३६॥२२८

सम्यग्दृष्टि जीव निःशंक होवे हे इकालिये वे निडर (निर्भय) होवे हे क्यों कि वे सप्तभय से (सात डर से) खाली होवे हे इकालिये वे निश्चे से निःशंक (बिना संका का) होवे हे ।

७॥३७॥२२९

जो आतमा कर्म-बंध को भरम पेदा करने वाली उन चार (मिथ्यात्व अविरति, कषाय ओर योगरूप चारज) पायों के काटी देवे हे उके निःशंक, सम्यग्दृष्टि मनन से जाननूं चईये ।

७॥३८॥२३०

जो आतमा कर्मनां का फल के ओर सारा धरमनां की इच्छा (कांक्षा) नी करे, उके निःकांक्ष, सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जाननूं चईये ।

७॥३९॥२३१

जो आतमा सारा धरमनां (वस्तु स्वभावनां) का लिये जुगुप्सा (ग्लानि, दुख) नी करे हे उनके सच्ची में निर्विचिकित्स सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जाननूं चईये ।

७॥४०॥२३२

जो आतमा सारा भावनां से अमूढ़ ओर यथार्थ दृष्टि वाली (चीज नां के सई सई देखने वाली) होवे हे वा सच्ची में अमूढदृष्टि, सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जाननूं चईये ।

७॥४१॥२३३

जो आतमा (शुद्धात्म भावनारूप) सिद्धभक्ति मे जुड़ी हे ओर सारा रागादिविभाव धरमनां को उपगूहक (नाश करने वाली हे) उके उपगूहनकारी सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जाननूं चईये ।

७॥४२॥२३४

जो आतमा उन्मार्ग में जाते हुए खुद अपनी आतमा के बी शिवमार्ग में रखे हे उके स्थितिकरण युक्त सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जानून चईये ।

७।।४४।।२३५

जो आतमा मोक्षमार्ग में तीन (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र) इन तीन साधनतां या मोक्षमार्ग का साधक तीन साधुनां (आचार्य, उपाध्याय और साधुनां का वास्ते प्यार (वात्सल्य) करे है ऊना वात्सल्यभाव (प्यार भाव) से जुडो सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जाननी चईये।

७।।४४।।२३६

जो आतमा विद्यारूपी रथ में बेठो के मनोरथ का रस्ता पे घूमे है, फिरे है उके जिनेन्द्रदेव का ग्यान की प्रभावना करने वाली सम्यग्दृष्टि मननपूर्वक जाननं चईये।

इति शुभम् १८-७-१९७९

———

अट्ठमो बंधाधियारो

(आठवो अध्याय)

८॥१॥२३७, ८॥२॥२३८, ८॥३॥२३९, ८॥४॥२४०, ८॥५॥२४१

जिनी तरे कोई मनक सरीर में तेल लगाई के ओर [illegible] धूका वाली जगे में गी के हथियार नां से कसरत करे हे ओर [illegible] तमाल केला ओर बास का झाड़ना का झुड के छेदे ओर काटे हे [illegible] सचित्त ओर अचित्त द्रव्यना के उपघात करे हे, भोत तरेका [illegible] से उपघात करतो हुओ उको धूल को बन्ध कीनो वजे से होवे [illegible] निश्चे से विचार करो।

उना मनक का सरीर पे जो तेल को चिकनोपन हे उनी वजे से [illegible] मनक को धूल से बन्ध होवे हे सरीर की बाकि उछलकूद से नी [illegible] हे यो निश्चे से जाननूं चइये।

इसी तरे भोत तरे की चेष्टा (हलचल) से प्रवर्तमान मिथ्या [illegible] उपयोग में रागादि भावनां के करते हुए कर्मरज से लिपटे हे।

८॥६॥२४२, ८॥७॥२४३, ८॥८॥२४४, ८॥९॥२४५, ८॥१०॥२४६

[illegible] तरे फिर वोज मनक सारा तेल के दूर करने पे ओर [illegible] हथियारनां से कसरत करे हे ओर ताड तमाल केला

ओर बांस का झाडनां झुंड के छेदे ओर भेदे हे; सचित्त ओर अचित्त द्रव्यनांका उपघात करे हे। भोन तरेका कारणों से उपघात करते हुए उके किनी वजे धूल को बन्ध नी होवे हे निश्चे से यो विचार करो।

उना मनक का शरीर पे वा जो तेल को चिकनोपन हे उकी वजे से उके धूल को बन्ध होवे हे शरीर की बाकी हलचल से धूल में बंधे नी हे यो निश्चे मे जानो।

इनी तरे सम्यग्दृष्टि जीव भोन तरे से योगनां में बरतते हुए उपयोग में रागादि भावना के नी करे हे इका लिये वो कर्म-रज से लिपटे नी हे ।

८॥११॥२४७

जो मनक माने हे कि हूं परजीव के मारूं हूँ ओर दूसरा जीवनां से मान्योजव हूँ वो मनक मोही हे ओर अग्यानी हे ओर जो इका विपरीत (खिलाफ, अलग) हे (जो असो नी माने हे) वो ग्यानी हे।

८॥१२॥२४८, ८॥१३॥२४९

जीवनां को मरनू आयु (उमर) कर्म से घटे हे। जिनेन्द्रदेव ने असो बतायो हे ओर तू उनका आयुकर्म के छीने नी हे तबे तूने उन परजीवनां के कसे मान्यो ?

जीवनां को मरनूं आयु कर्म का घटना से होवे हे जिनेन्द्रदेव ने असो बनायो हे परजीव थारो आयु कर्म नी घटावे हे तबे उनने थारो मरनूं कसे कऱ्यो (थारे कसे मान्यो ?)

८॥१४॥२५०

जो मनक असो माने हे कि हूं परजीवनां के जिन्दो रखूं हूं ओर परजीव म्हारे जिन्दो रखे हे वे मनक मोही ओर अग्यानी हे ओर जो इकासे विपरीत (खिलाफ, अलग) हे जो असो नी माने हे वे ग्यानी हे।

८॥१५॥२५१, ८॥१६॥२५२

जीव आयुकर्म का उगने से जिन्दो रेवे हे असो सर्वज्ञ देव केवे हे। तू दूसरा जीवनां के आयुकर्म नी दे हे तब तूने उना परजीवनां के जिन्दो कर्यो ?

जीव आयुकर्म का उगने से जिन्दो रेवे हे, असो सर्वज्ञदेव केवे हे। परजीवनां थारे आयुकर्म नी देवे हे, तबे उना परजीवनां ने थारे कसे जिन्दो कर्यो ?

८॥१७॥२५३

जो असो माने हे कि हूं अपना से परजीवनां के दुखी ओर सुखी करूं हूं वो मोही (भरम में रेवे हे) ओर अग्यानी हे। जो इका विरुद्ध (खिलाफ) माने हे वो ग्यानी हे।

८॥१८॥२५४, ८॥१९॥२५५, ८॥२०॥२५६

अगर कर्म का उगने से सारा जीव दुखी ओर सुखी होवे हे ओर तू उनके कर्म तो देवे नी हे तबे तूने जीवनां के किनी तरे दुखी ओर सुखी किया (कर्या) ?

अगर सारा जीवनां कर्म उगने से दुखी ओर सुखी होवे हे ओर वे थारे (तखे) कर्म नी देवे हे तवे थारे उन जीवनां ने किनी तर दुखी कर्यो ?

अगर सारा जीव कर्म का उगने से दुखी ओर सुखी होवे हे ओर वे जीव थारे (तखे) कर्म नी देवे हे तवे उनने थारे (तखे) कसे सुखी कर्यो ?

८॥२१॥२५७, ८॥२२॥२५८

जो मरे हे ओर जो दुखी होवे हे वो सब कर्म का उगने से होवे हे इका लिये "म्हने अमुक के मारी नाख्यो या मने (म्हने) अमुक के दुखी कर्यो" थारो असो केनू कई सच्ची में झूठो नी हे ?

जो नी तो मरे हे ओर नी दुखी होवे हे वो जीव बी सच्ची में कर्म का उगनां सेज होवे हे। इका लिये "इसे मने (म्हने) नी मार्यो ओर इके मने (म्हने) दुखी नी कर्यो" असो थारो केनू कई झूठो नी हे ?

८॥२३॥२५९

थारी या जो बुद्धि हे कि हूं जीवनां के दुखी-सुखी करू हूं वा थारी मूरख पनां की बुद्धिज थारे सुभ ओर असुभ कर्म से बांधे हे।

८॥२४॥२६०, ८॥२५॥२६१

हूं जीवनां के दुखी ओर सुखी करू हूं इनी तरेका थारा जो अध्यवसान (रागादि) हे वे अध्यवसान पाप का बन्ध करने वाला या पुन्न का बन्ध करने वाला हे।

हूं जीवनां के मारूं हूं ओर जिन्दा रखूं हूं इनी तरे का जो थारा (रागादि) अध्यवसान हे वे अध्यवसान पाप का बन्ध करने वाला या पुन्न का बन्ध करने वाला हे।

८॥२६॥२६२

जीवनां के मारो या मत मारो कर्म बन्ध अध्यवसान से होवे हे यो निश्चे नय (दृष्टि) की तरे से जीव-बन्ध के थोड़ा में कियो हे।

८॥२७॥२६३ , ८॥२८॥२६४

इनी तरे (हिंसा का अध्यवसान की तरे) झूठ में, चोरी में अब्रह्मचर्य में ओर परिग्रह में जो अध्यवसान करयो जावे हे उके पाप को बन्ध होवे हे।

ओर इनी तरे सच्चाई (सत्य में); अचौर्य (चोरी नी करने में) ब्रह्मचर्य में ओर अपरिग्रह में जो अध्यवसान कियो जावे हे उकामे पुन्न को बन्ध होवे हे।

८॥२९॥२६५

फिर (चेतन अचेतन से बाहेर) वस्तु को आलम्बन (आसरो) ली के जीव को वो रागादि अध्यवसान होवे हे। सच्ची में चीजनां से बन्ध नी होवे हे; अध्यवसान सेज बन्ध होवे हे।

हूं जीवनां के दुखी-सुखी करूं हूं उनके बंधऊं हूं छुड़ऊं हूं (अगर) थारी असी मूरखपनां की बुद्धि हे वा बिना अरथ (मतलब) की हे इका से वा सच्ची मेंज झूटी हे।

८॥३१॥२६७

अगर सच्ची मेंज अध्यवसान का निमित्त से जीव कर्मनां से बंधे हे ओर मोक्षमार्ग में रा के कर्मनां से छूटे हे नवे तू कई करे हे ?

८॥३२॥२६८; ८॥३३॥२६९

जीव अध्यवसान से तिर्यञ्च नारक देव ओर मनक इन सब रूप ओर भोत तरेका पुन्न ओर पाप इन सब रूपना के अपना आप करे हे।

ओर इनी तरेज जीव अध्यवसान से धरम-अधरम, जीव-अजीव लोक ओर अलोक इन सब रूपनां के अपने करे हे।

८॥३४॥२७०

वे पेला किया गया अध्यवसान ओर इनो तरेका जो दूसरा बी अध्यवसान जिनके नी हे वे मुनि असुभ ओर सुभ से लिपटाय नी हे।

८॥३५॥२७१

बुद्धि व्यवसाय (बेवार-बेपार) अध्यवसान, मति, विग्यान चित्त भाव ओर परिणाम इनको एकज अरथ (मतलब) हे।

८॥३६॥२७२

इनी तरे बेवार नय (नीति) निश्चे नय (नीति) से निषिद्ध जानों; फिर निश्चे नय का आसरावाला मुनि निर्वाण के पोंचे हे।

८॥३७॥२७३

जिनेन्द्र देव ने किया हुआ बरत, समिति, गुप्ति, शील ओर तप के करते हुए बी (अभव्य) अपात्र जीव अग्यानी, मिथ्यादृष्टि हे।

८॥३८॥२७४

जो (अभव्य) अयोग्य (अपात्र) जीव है वे सास्तर पढ़े हैं पर मोक्ष तत्व को श्रद्धान नी करे तो ग्यान को श्रद्धान नी करने वाला उना अभव्य (अपात्र) जीव को सास्तर पढ़ने से कई फायदो नी (है)।

८॥३९॥२७५

जबे अभव्य जीव भोग का निमित्त भूत धरम कोज श्रद्धान करे है (उकोज) प्रतीति (अनुभव) करे है (उकोज) रुचि करे है ओर फिर (उकेज) छूए है पन कर्म क्षय का निमित्त रूप (धर्म की श्रद्धा, प्रतीति, रुचि ओर स्पर्श) नी करे (है)।

८॥४०॥२७६, ८॥४१॥२७७

आचारांग ओर दूसरा सास्तर ग्यान है, जीवादि तत्व दर्शन जाननूं चईये ओर छे जीवनिकाय चारित्र है—इनी तरे बेवार नय (दृष्टि) केवे है।

निश्चे से म्हारी आतमाज ग्यान है, म्हारी आतमाज दरसन ओर चारित्र है, म्हारी आतमाज प्रत्याख्यान है ओर म्हारी आतमाज संवर ओर योग है (असो निश्चे नय (दृष्टि, चिन्तन) केवे है।)

८॥४२॥२७८, ८॥४३॥२७९

जसे स्फटिक मणि विशुद्ध है वा खुद लाल और दूसरा रंग से बदले नी है पन वा दूसरा लाल आदि रंगवाला द्रव्य से लाल आदि रूप परिणमन करे है। इनी तरे ग्यानी सुद्ध है। वो रागादि रूप में

खुद परिणमन नी करे है। पन वो दूसरा रागादि दोसनां से रागरूप परिणमन करे है।

८।६४।।२८०

ग्यानी राग द्वेष मोह का या कषाय भाव के खुद निजरूप (में) नी करे है इका लिये वो उना भावनां को कर्ता (करने वालो) नी है।

८।।६५।।२८१

राग का होने पे, द्वेष का होने पे ओर कषाय कर्मनां का होने पे जो भाव होवे है उना रूप (के) परिणमन करतो हुओ (अग्यानी) रागादि के वार-वार बांधे है।

८।।६६।।२८२

राग द्वेष ओर कषाय कर्मरूप होने पे जो रागादि परिणाम होवे है उना रूप परिणमन के करतो हुओ आतमा रागादि के बांधे है।

८।।६७।।२८३, ८।।६८।।२८४, ८।।६९।।२८५

(पूर्वानुभूत विषय रागादिरूप) अप्रतिक्रमण दो तरे को होवे है। इनी तरे (भावी विषयकांक्षा रूप) अप्रत्याख्यान (दो तरेका) जाननो चईये। इना उपदेस मे आतमा अकारक कियो गयो है। अपिविक्रमण ओर अप्रत्याख्यान वी द्रव्य ओर भावरूप से दो तरेका है। इना उपदेस मे आतमा अकारक कियो गयो है। जब तक आतमा द्रव्य ओर भाव को प्रत्याख्यान नी करे ओर प्रतिक्रमण नी करे तब तक वो आतमा कर्ता (करने वालो) होवे है असो समजनू चईये।

८॥५०॥२८६, ८॥५१॥२८७

अधःकर्म (बुरा काम) आदि जो पुद्गल द्रव्य का दोस हे उनके ग्यानी (आतमा) किनी तरे करी सके हे जो कि हमेसा परद्रव्य का गुन हे। यो अधःकर्म औद्देशिक पुद्गलमय द्रव्य हे। यो म्हारो कर्यो हुओ कसे हुई सके हे जो हमेसा अचेतन कियो गयो हे ?

१९–७–७९ इति शुभम्

णवमो मोक्खाधियारो

(नवमो अध्याय)

९॥१॥२८८ , ९॥२॥२८९ , ९॥३॥२९०

जिनी तरे बन्धन में भोत बखत से बन्ध्यो हुओ कोई मनक उना बन्धन का तेज ओर धीमा स्वभाव के ओर उका काल (समय) के जाने हे अगर वो उना बन्धन के नी काटे हे तो वो उना बन्धन से नी छूटे हे ओर बन्धन का बस में हुई के वो मनक भोत काल में बी छूटी नी सके हे ।

इनी तरे जीव कर्मबन्धन नां का प्रदेश, प्रकृति, स्थिति ओर अनुभाग के जानते हुए बी कर्म-बन्ध से नी छूटे हे । अगर वो रागादि के दूर करी के सुद्ध होवे हे तो सारा कर्मबन्ध से छूटी जावे हे ।

९॥४॥२९१

जिनी तरे बन्धन में पड़्यो हुओ कोई मनक उना बन्धन की फिकर करतो हुओ छूटी नी सके हे उनी तरे जीव बी कर्मबन्ध की फिकर करतो हुओ मुक्ति नी पावे हे ।

९॥५॥२९२

जिनी तरे बन्धन में पड़्यो हुओ कोई मनक बन्धननां के काटी के निश्चे मुक्ति के पावे हे उनो तरे जीव कर्मबन्ध के काटो के मोक्ष के पावे हे ।

९॥६॥२९३

बन्धों का स्वभाव के ओर आतमा का स्वभाव के जानी के जो मनक बन्धनां की ओर से विरक्त (छोडी दे है) होवे है वो कर्म से छूटे है।

९॥७॥२९४

जीव ओर बन्ध ये दोई अपनां-अपनां ठेऱ्या हुआ लक्खननां से अलग किया जावे है। प्रज्ञा रूपी छुरी से छेद्या हुआ ये अलग रूप हुई आवे है।

९॥८॥२९५

जीव ओर बन्ध अपनां-अपनां ठेऱ्या हुआ लक्खननां से अलग हुई जावे है। वां बन्ध के तो (आतमा से) अलग करी देनू चईये ओर सुद्ध आतमा के लेनू चईये।

९॥९॥२९६

(चेलो गुरु से पूछे है) : वा सुद्ध आतमा किनी तरे ली जावे ? (गुरू जवाब देवे है) वा सुद्ध आतमा प्रज्ञा से ली जावे है। जसे वा पेला प्रज्ञा से विभक्त (अलग) करी गई थी उनी तरे प्रज्ञा से उके लेनूं चईये।

९॥१०॥२९७

प्रज्ञा से इनी तरे ली जानी चईये कि जो चिदात्मा है निश्चे से वो हूंज हूं ; बाकि का जो भाव है वे म्हारा से पर है यो जाननू। चईये।

९॥११॥२९८

प्रज्ञा से इनी तरे लेनूं चईये कि जो देखने वालो (द्रष्टा) हे निश्चे से वो हूंज हूं। बाकि जो भाव हे वे म्हारा से पर हे यो जाननूं चईये।

९॥१२॥२९९

प्रज्ञा से इनी तरे लेनूं चईये कि जो जानने वालो (ज्ञाता) हे निश्चे से वो हूंज हूं; बाकि जो भाव हे वे म्हारा से पर हे यो जाननूं चईये।

९॥१३॥३००

आतमा जो सुद्ध जानतो हुओ बाकि सब भावनां के पर जानीके कोन अकलवालो 'ये भाव म्हारा हे' असो केगो ?

९॥१४॥३०१, ९॥१५॥३०२, ९॥१६॥३०३

जो मनक चोरी आदि गुना (गुनाह) के करे हे वो मनक संका से भऱ्यो रेवे हे कि मनकनां का बीच में घूमते हुए "चोर हे" असो जानी के कोई मखे पकडी नी ले। जो मनक गुनो (गुनाह) नी करे वो तो देस में बिना संका के फिरे हे क्यूंकि उका मन में पकड्या जाने को डर कबी पेदा नी होवे हे।

इनी तरे गुना करने वाली आतमा डरी हुई रेवे हे कि हूं (ज्ञानावरणादि कर्म से) बन्ध के पोंचूगा। यदि वो बेगुना (निरपराध) हे तो वो बिना संका के रेवे हे कि हूं पकड्यो नी जाऊंगा।

३॥१७॥३०४, ३॥१८॥३०४

संसिद्धि, राध, सिद्ध, आधित ओर आराधित इनको एकज अरथ (मतलब) हे। (खुद की शुद्धात्मा की आराधना से खाली हे वो आतमा अपराध होवे हे ओर जो आतमा निरपराध होवे हे वो बिना संका को होवे हे असो आतमा हूं (उपयोग स्वरूप एक शुद्ध आत्मा हूं (उपयोग स्वरूप एक शुद्ध आत्मा) हूं, इनी तरे जानतो हुओ (शुद्धात्मसिद्धि रूप) आराधना से हमेशा बरते हे।

९॥१९॥३०६, ९॥२०॥३०७

प्रतिक्रमण प्रतिसरण, परिहार, धारणा, निवृत्ति, निन्दा, गर्हा ओर शुद्धि ये आठ तरेका जेरका घडा (विषकुंभ) हे। (क्यूंकि इनमें कर्तृत्वबुद्धि होवे हे)।

अप्रतिक्रमण, अप्रतिसरण, अपरिहार, अनिवृत्ति, अनिन्दा, अगर्हा ओर अशुद्धि ये आठ अमरत का घडा (अमृत कुंभ) हे। (क्यूं कि इनमें कर्तृत्व को निषेध (रोक) हे।

१९-७-७९

इति शुभम्

दहमो सव्वविसुद्ध णाणाधियारो

(दसवों अध्याय)

१०॥१॥३०८, १०॥२॥३०९, १०॥३॥३१०, १०॥४॥३११

जो द्रव्य जिना गुणनां मे पेदा होवे हे उके उना गुणनां से अनन्य जानो। जसे दुनिया में कटक याने सोना का कंगन आदि पर्याय (दूसरी जानना मे) मे सोनो अलग नी हे। जीव ओर अजीव के जो परिणाम सूत्र में किया हे उन परिणामनां से उन जीव ओर अजीव के अनन्य जानो, क्यूं कि वो आतमा कोई से पेदा नी हुओ हे इका लिए वो कोई को कार्य नी हे। (वो) कोई के पेदा नी करे हे इनी वजे से वो कोई को कारण भी नी हे। किना दूसरा के पेदा नी करे हे इनी वजे से कोई को कारण बी नी हे। नियम से कर्म को आसरो ली के कर्ता होवे हे ओर कर्ता को आसरो ली के कर्म पेदा होवे हे। कर्ता-कर्म की ओर कोई सिद्धि नी देखी जावे हे।

१०॥५॥३१२, १०॥६॥३१३

या आतमा प्रकृति का निमित्त से पेदा होवे हे ओर नास होवे हे ओर वे कर्मप्रकृतिनां बी आतमा का निमित्त से पेदा होवे हे ओर विनास होवे हे। इनी तरे का एक-दूसरा का निमित्त से आतमा ओर कर्मप्रकृतिनां दोई को बंध होवे हे। उना बन्ध से दुनिया होवे हे।

१०॥७॥३१४, १०॥८॥३१५

जब तक वा आतमा कर्म प्रकृति का निमित्त मे होने वाली उत्पत्ति (पेदा होनूं) ओर विनाश (नास) के नी छोड़े हे, तब तक वो अग्यानी, मिथ्या दृष्टि ओर असंयत (रेवे) हे। जबे आतमा अनंत कर्मफल के छोड़ी देवे हे तबे वो बन्ध से छुट्यो हुओ ग्याता, दृष्टा ओर संयत हे।

१०॥९॥३१६

अग्यानी प्रकृति का स्वभाव में ठेर्यो हुओ (हर्ष-विषाद मे एक रूप बन्यो) कर्म का फल के भोगे हे ओर ग्यानी उग्या हुआ कर्म का फल के जाने हे, भोगे नी हे।

१०॥१०॥३१७

छोटा (अभव्य) जीव साम्तरत्तां के अच्छी तरे पढ़ी के वी प्रकृति/स्वभाव के नी छोड़े हे। जसे साप गुड मिल्या दूध के पी के वी जेर से अलग नी होवे हे।

१०॥११॥३१८

बेराग के पोंच्यो ग्यानी मीठा, कड़वा भोत तरेका कर्मफल के जाने हे; इकालिये वो कर्मफल के भोगने वालो नी हे।

१०॥१२॥३१९

ग्यानी भोत तरेका कर्म के नी तो करे हे, नी भोगे हे पर वो पुन्न ओर पाप रूप कर्मबन्ध के ओर कर्मफल के जाने हे।

१०॥१३॥३२०

जसे आंख (दृश्य से अलग होने से वा दृश्य के नी करे हे नी अनुभव करे हे) उनी तरे ग्यान (कर्म से अलग होने से) खुद कर्म को कर्ता नी हे ओर उनको भोगने वालो बी नी हे । (वो तो) बन्ध मोक्ष कर्म का उगने के ओर निर्जरा के जाने हे ।

१०॥१४॥३२१, १०॥१५॥३२२, १०॥१६॥३२३

लोक का मत में सुर, नारक, तिर्यञ्च ओर मनक प्राणिनां के विष्णु करे हे ओर यदि श्रमणनां का मतानुसार बी आतमा छे (छह) सरीर के जीवनां को (जीवों के कार्यों को) करता हे तो इनी तरे लोक ओर श्रमणनां में सिद्धान्त की दृष्टि (बात) से कोई फरक नी दीखे हे लोक का मत में विष्णु करे हे ओर श्रमणनां का मत में आतमा करे हे। इनी तरे देव, मनक ओर असुर लोकनां को सदा करते हुए (कर्ताभाव से प्रवर्तमान) लोक ओर श्रमण दोई के भी कोई मोक्ष नी दीखे हे।

१०॥१७॥३२४

(अग्यानी लोग) बेवार नय (दृष्टि)से "परद्रव्य म्हारो हे" असो केवे हे ओर पदार्थ का स्वरूप के जानने वालो ग्यानी जन तो जाने हे कि निश्चे नय से इनी दुनिया में परमाणु मात्र कई बी म्हारो नी हे।

१०॥२५॥३३२, १०॥२६॥३३३, १०॥२७॥३३४
१०॥२८॥३३५

(पूर्वपक्ष) कर्मनां मे जीव अग्यानी कियो जावे है उनी तरे कर्मनां से ज्ञानी होवे है। कर्मनां मे जीव सुवायो जावे है उनी तरे कर्मनां मे जीव जगायो जावे है। कर्मनां मे जीव सुखी होवे है, कर्मनां मे जीव दुखी होवे है। कर्मनां मे जीव मिथ्यात्व ओर असयम के मिलावे है ओर कर्म मे जीव ऊर्ध्वलोक, अधोलोक ओर तिर्यग्लोक में घूमे है। कर्मनां मे जो कई जितरो सुभ ओर असुभ है वो होवे है, क्यूं कि कर्म करे है, कर्म देवे है, इनी तरे जो कई है उके कर्मजहरा (छिनी) लेवे है। इका लिये सारा जीव अकर्ता सिद्ध होवे है (ठेरे है)।

१०॥२९॥३३६, १०॥३०॥३३७, १०॥३१॥३३८
१०॥३२॥३३९

(उपर का मत वाला यो बी माने है कि मनक वेदकर्म लुगई की आसा करे है, आ स्त्री वेदकर्म मनक की आसा करे है, आचार्य परंपरा में आई असी श्रुति है इका लिये कोई अब्रह्मचारी नी है।

क्यों कि जो दूसरा मारे है ओर दूसरा मे मार्‍यो जावे है वो बी कर्म है। इना अरथ में परघात नाम कर्म कियो जावे है इका लिये तमारा मत मे कोई जीव उपघात करने वालो नी है क्यूं कि कर्मज कर्म के मारे है यो कियो गयो है।"

१०॥३३॥३४०

(आचार्य देव केवे है कि) इनी तरे सांख्यमत को असो उपदेश

जो श्रमण करे हे उनका मन में प्रकृनिज करे हे ओर सारी आतमा अकारक हे। (असो ठेरे हे, सिद्ध होवे हे)।

१०॥३४॥३४१, १०॥३५॥३४२, १०॥३६॥३४३
१०॥३७॥३४४

या (कर्त्तृत्व को पक्ष सिद्ध करने का लिये) असो मानो कि म्हारो आतमा अपना द्रव्य रूप आतमा के करे (करता हे) हे। असो केने वाला थारो यो मिथात्व भाव हे क्यू कि परमागम में आतमा को नित्य ओर असख्यात प्रदेशनां के कियो गयो हे। आतमा उका से छोटो (हीन) या ज्यादा (अधिक) नी कियो जई सके हे। विस्तार की जगे (अपेक्षा) जीव को जीवरूप निश्चे से लोकमात्र जानो। आतमा उकासे कई छोटो या बडो होवे हे। जो तू केवे हे कि आतमा ने द्रव्यरूप आतमा के कर्यो या अगर थारो असो मत हे कि ज्ञायक भाव तो ग्यान स्वभाव में ठेर्यो हे तो इकामे बी आतमा खुद अपना आतमा के नी करे हे।(यो सिद्ध (ठेरे) होवे हे)।

१०॥३८॥३४५, १०॥३९॥३४६, १०॥४०॥३४७,
१०॥४१॥३४८

क्यू कि जीव किनरा पर्यायनां से नास होवे हे ओर किनराज पर्यायनां से नास नी होवे हे इकालिये जो भोगे हे वो करे हे या दूसरो करे हे असो एकान्त नी हे क्यू कि जीव किनरा पर्यायनां से नास होवे हे ओर किनराज पर्यायनां से नास नी होवे हे इका लिये (जो करे हे) वो भोगे हे या दूसरो भोगे असो एकान्त नी हे।

जो जीव करे हे वो नी भोगे हे जिको यो सिद्धान्त हे वो जीव मिथ्या दृष्टि आर्हत मत के नी मानने वालो समजनू चईये। कोई

दूसरो करे है ओर कोई दूसरो भोगे है जिको असो सिद्धान्त है वो जीव मिथ्या दृष्टि आर्हत मत के नी मानने वालो समजनो चईये।

१०।।४२।।३४१, १०।।४३।।३५०,
१०।।४४।।३५१, १०।।४५।।३५२

जिनी तरे सुनार आदि दूसरा कारीगर कुंडल आदि बनावे है, कर्म करे है पन वे उनमे एकरूप नी होवे है; उनी तरे जीव बी ज्ञानावरणादि पुद्‌गल कर्म करे है पन वो उनमें एकरूप नी होवे है।

जिनी तरे कारीगर हतोडा आदि ओजारनां से कुंडल आदि बनावे है पन वो उकासे एकरूप नी होवे है। उनी तरे जीव बी मन वचन सरीर रूप करनना से ज्ञानावरणादि कर्म करे है पन वो उनमे एकरूप नी होवे है।

जसे सुनार आदि कारीगर उपकरणनां के लेवे है पन वो उनमे एकरूप नी होवे है उनी तरे जीव बी मन वचन सरीर रूप करणनां के लेवे है पन एकरूप नी होवे है।

जसे सुनार आदि कारीगर कुंडल आदि करमनां का फल के भोगे है पन वो उना फल मे एकरूप नी होवे है उनी तरे जीव बी करम का सुख, दुखरूप फल के भोगे है पन वो उना फल मे एकरूप नी होवे है।

१०।।४६।।३५३

इनी तरे तो बेवार नीति को मत थोडा में केने लायक है। आगे निश्चे नीति का वचन सुनो जो अपनां ननीजानां मे किया हुआ होवे है।

१०॥४७॥३५४, १०॥४८॥३५५

जसे सुनार आदि कारीगर चेष्टा (कर्म) करे हे ओर उनी चेष्टा मे वो एकरूप हुई जावे हे। उनी तरे जीव बी रागादि भाव कर्म करे हे ओर वो उना भाव कर्म में एकरूप हुई जावे हे। जसे सुनार आदि कारीगर चेष्टा करतें हुए रोज दुखी होवे हे ओर उना दुःख से एकरूप होवे हे उनी तरे जीव हर्ष-विषाद रूप चेष्टा करतो हुओ दुखी होवे हे (ओर उना दुख मे एकरूप होवे हे।

१०॥४९॥३५६, १०॥५०॥३५७, १०॥५१॥३५८, १०॥५२॥३५९

जसे सफेद खडिया (चाक मिट्टी) पर की (दीवार आदि रूप) नी हे सफेदी वा तो सफेदीज हे। उनी तरे ज्ञायक (आतमा) पर को (ज्ञेयरूप) नी हे। ज्ञायक वो तो ज्ञायकज हे। जसे सफेद खडिया पर की नी हे। सफेदी वा तो सफेदीज हे दर्शक (दृष्टा देखने वालो) वो तो दर्शकज हे। जसे सफेद खडिया पर की नी हे। सफेदी वा तो सफेदीज हे उनी तरे संयत (आतमा) पर को (परिग्रहादि) रूप) नी हे संयत वो तो संयतज हे। जसे सफेद खडिया पर की नी हे उनी तरे दर्शन (श्रद्धान) पर को नी हे; दर्शन वो तो दर्शनज हे।

१०॥५३॥३६०

इनी तरे ग्यान दरसन ओर चारित्र का बारा में निश्चे नीति को केनो हुओ, ओर अबे उका बारा में थोडा में बेवार नीति को केनो सुनो।

१०॥५४॥३६१, १०॥५५॥३६२, १०॥५६॥३६३
१०॥५७॥३६४

जसे सफेद खड़िया अपनां स्वभाव सेज परद्रव्य (दीवार आदि) के सफेद करे है उनी तरे ज्ञाता आतमा बी अपनां स्वभाव से परद्रव्य के जाने है।

जसे सफेद खड़िया अपना स्वभाव सेज परद्रव्य के सफेद करे है उनी तरे जीव बी अपनां स्वभाव से परद्रव्य के देखे है।

जसे सफेद खड़िया अपनां स्वभाव सेज परद्रव्य के सफेद करे है उनी तरे ज्ञाता आतमा बी अपना स्वभाव से परद्रव्य के छोड़े है।

जसे सफेद खड़िया अपना स्वभाव से परद्रव्य के सफेद करे है उनी तरे सम्यग्दृष्टि अपना स्वभाव से परद्रव्य को श्रद्धान करे है।

१०॥५८॥३६५

इनी तरे ग्यान, दरसन और चारित्र का बारा में ब्वार नीति को निर्णय (निकाल) कियो है। दूसरा पर्यायनां में बी इनी तरे से जाननूं चइये।

१०॥५९॥३६६, १०॥६०॥३६७, १०॥६१॥३६८

दरसन, ग्यान और चारित्र अचेतन का बारा में थोड़ासा बी (किंचिन्मात्र) बी नी है इका लिये आतमा उन विषयनां को कई घात करेगो ? दरसन ग्यान और चारित्र अचेतन कर्म में थोड़ासा बी नी है इका लिये आतमा उना कर्म में कई घात करेगो ?

दरसन ग्यान और चारित्र सरीर (काम) में थोड़ा सा बी नी है इका लिये आतमा उन सरीरनां में कई घात करेगो ?

१०॥६२॥३६९

ग्यान दरसन और चारित्र को घात बतायो है पन उना पुद्गल द्रव्य मे कोई घात नी बतायो है ।

१०॥६३॥३७०

जीव का जो कोई गुण है वे सब्बी में परद्रव्यनां में नी है इका लिये सम्यग्दृष्टि के विषयनां में राग (लगाव) नी है ।

१०॥६४॥३७१

राग द्वेष मोह ये जीव का अनन्य परिणाम (नतीजा) है । इनी वजे से राग आदि (परिणाम) सबद में नी है ।

१०॥६५॥३७२

दूसरा द्रव्य से दूसरा द्रव्य का गुणनां पेदा नी किया जई सके इका लिये सारा द्रव्यनां अपनां-अपनां स्वभाव से पेदा होवे है ।

१०॥६६॥३७३, १०॥६७॥३७४

पुद्गल भात तरे से निंदा और स्तुति का वचननां का रूप में परिणमित होवे है । उन वचननां के सुनी के 'म्हारे कियो है' यो मानी के तू रूठे है और संतोस (तुष्टि) पावे है ।

पुद्गल द्रव्यरूप परिणमित हुयो है । उका गुण अगर थारा से अलग है तो फिर हे अग्यानी ! थारे कई बी नी कियो है फिर तू क्यूं रूठे है (थारे क्यूं बुरो लगे है ?) ।

१०॥६८॥३७५

अमुभ (बुरा) या मुभ (अच्छा) सबद थारे नी केवे हे कि "तू हमके मुन" या आनमा वी श्रोत्र इन्द्रिय (कान) का विषय में आया हुआ सबद के लेने के नी जावे हे।

१०॥६९॥३७६

अमुभ या मुभ रूप थारे यो नी केवे कि "तू हमारे देख" ओर आनमा की चक्षु इन्द्रिय (आंख) का विषय में आया हुआ रूप के लेने का लिये नी जावे हे।

१०॥७०॥३७७

अमुभ या मुभ वास (गंध) थारे यो नी केवे कि "तू म्हारे संग" ओर आनमा की घ्राणेन्द्रिय (नाक) का विषय में आई हुई बास के लेने का लिये नी जावे हे।

१०॥७१॥३७८

अमुभ या मुभ रस थारे यो नी केवे कि "तू म्हारे चख" ओर आनमा की रसना (जीब, जिभ) इन्द्रिय का विषय में आया हुआ रस के लेने का लिये नी जावे हे।

१०॥७२॥३७९

अमुभ या मुभ स्पर्श (छूत) थारे यो नी केवे कि "तू म्हारे छू" और आनमा वी स्पर्शन इन्द्रिय का विषय में आया हुआ स्पर्श के लेने का लिये नी जावे हे।

१०॥७३॥३८०

अमुभ या मुभ गुण थारे यो नी केवे कि "तू म्हारे जान" ओर

आतमा भी वृद्धि का बाग में आया हुआ गुण के लेने का लिये नी जावे है।

१०॥७८॥३८१

असुभ या सुभ द्रव्य थारे यो नी केवे कि "तू म्हारे जान" ओर आतमा बी वृद्धि का बाग में आया हुआ द्रव्य के लेने का लिये नी जावे है।

१०॥७९॥३८२

इनी तरे ज्ञानी के सुन्ख जीव मान्ति नी पावे है। वो पर के लेने की इच्छा (मन) करे है ओर खुद उके कल्यान करने वाली बुद्धि (सम्यग्ज्ञान) नी मिले है।

१०॥७६॥३८३

पेला किया हुआ (मूलोत्तर प्रकृति रूप में) भोग फेलाव वाला जो सुभ ओर असुभ कर्म है उनमे जो जीव अपनां के दूर करी लेवे है वो जीवज प्रतिक्रमण है।

१०॥७७॥३८४

ओर आगे आने वाला जो सुभ-असुभ कर्म जिना भाव का होने पे बंधे है उना भाव मे जो आतमा छूटे है वा आतमा प्रत्याख्यान है।

१०॥७८॥३८५

अबी की बखत (वर्तमानकाल) में उग्या हुआ (मूलोत्तर प्रकृति का रूप में) भोग फेल्या हुआ जो कर्म है उना दोस के जो जीव (भेदरूप) अनुभव करे है वो जीव सच्ची में आलोचना है।

१०॥७९॥३८६

जो आतमा रोज (नित्य) प्रत्याख्यान करे हे हमेशा जो प्रतिक्रमण करे हे जो नित्य आलोचना करे हे वो आतमा निश्चे से चारित्र हे।

१०॥८०॥३८७, १०॥८१॥३८८, १०॥८२॥३८९

कर्म का फल के वेदन करतो हुओ जो आतमा कर्म का फल को निजरूप करे हे (माने हे) वो दुख को बीज आठ तरे का कर्म के फिर बी बांधे हे।

कर्म का फल को वेदन करतो हुओ जो आतमा "कर्म को फल म्हने कर्यो" असो माने हे वो दुख का बीज आठ तरे का कर्म के फिर बी बांधे हे।

कर्म का फल को वेदन करतो हुओ जो आतमा सुखी ओर दुखी होवे हे वो दुख का बीज आठ तरे का कर्म के फिर बी बांधे हे।

१०॥८३॥३९०

सास्तर ग्यान नी हे क्यों कि सास्तर कई नी जाने हे इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) हे, सास्तर दूसरो (अलग) हे असो जिनेन्द्र देव केवे हे।

१०॥८४॥३९१

रूप ग्यान नी हे क्यूं कि रूप कई नी जाने हे इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) हे, सबद दूसरो (अलग) हे असो जिनेन्द्र देव केवे हे।

१०॥८६॥३९३

वर्ण (रंग, जाति) ग्यान नी है क्यूं कि वर्ण कई नी जाने है इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) है वर्ण दूसरो (अलग) है असो जिनेन्द्रदेव केवे है।

१०॥८७॥३९४

गन्ध ग्यान नी है क्यूं कि गंध कई नी जाने है इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) है गन्ध दूसरो (अलग) है असो जिनेन्द्रदेव केवे है।

१०॥८८॥३९५

रस ग्यान नी है क्यूं कि रस नो कई नी जाने है इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) है ओर रस दूसरो (अलग) है असो जिनेन्द्रदेव केवे है।

१०॥८९॥३९६

स्पर्श ग्यान नी है क्यूं कि स्पर्श कई नी जाने है इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) है ओर स्पर्श दूसरो (अलग) है असो जिनेन्द्रदेव केवे है।

१०॥९०॥३९७

कर्म ग्यान नी है क्यूं कि कर्म कई नी जाने है इका लिये ग्यान दूसरो (अलग) है ओर कर्म दूसरो (अलग) है असो जिनेन्द्रदेव केवे है।

१०॥९.१॥३९८

धर्म द्रव्य ग्यान नी हे क्यू कि धर्मद्रव्य कई नी जाने हे इका लिये ग्यान अलग हे धर्म द्रव्य अलग हे असो जिनेन्द्रदेव केवे हे ।

१०॥९.२॥३९९

अधर्म द्रव्य ग्यान नी हे क्यूं कि अधर्म द्रव्य कई नी जाने हे इका लिये ग्यान अलग हे अधर्म द्रव्य अलग हे असो जिनेन्द्रदेव केवे हे ।

१०॥९.३॥४००

काल द्रव्य ग्यान नी हे क्यूं कि काल द्रव्य कई नी जाने हे इका लिये ग्यान अलग हे कालद्रव्य अलग हे असो जिनेन्द्रदेव केवे हे ।

१०॥९.४॥४०१

आकाश द्रव्य बी ग्यान नी हे क्यू कि आकाश द्रव्य कई नी जाने हे इकालिये आकाश द्रव्य अलग हे ग्यान अलग हे असो जिनेन्द्रदेव केवे हे ।

१०॥९.५॥४०२

अध्यवसान ग्यान नी हे क्यू कि अध्यवसान अचेतन (जड) हे इका लिये ग्यान अलग हे ओर अध्यवसान अलग हे ।

१०॥९.६॥४०३ , १०॥९.७॥४०४

क्यूं कि जीव हमेसा जाने हे इका लिये ज्ञायक जीव ग्यानी हे ओर ग्यान ज्ञायक से जुड्यो (अभिन्न) हे असो जाननू चईये । ग्यानीजन ग्यान केज सम्यग्दृष्टि, संयम, अंगपूर्वगत सूत्र धर्म ओर अधर्म ओर दीक्षा माने हे ।

१०॥९८॥४०५, १०॥९९॥४०६, १०॥१००॥४०७

इनी तरे जिकी आतमा (अमूर्तिक) हे वो निश्चे से आहारक नी हे सच्ची में आहार (खान) मूर्तिक हे क्यों कि आहार पुद्गल मय हे। उनी आतमा को वो कोई प्रायोगिक या वैस्रसिक गुण हे कि वो परद्रव्य के नी लेवे हे ओर नी छोडी सके हे इका लिये (अनाहारक होने की वजे से) जो विसुद्ध आतमा हे वो जीव-अजीव परद्रव्यनां में नी तो कई लेवे हे ओर नी कई छोडे हे।

१०॥१०१॥४०८, १०॥१०२॥४०९

भोत तरेका साधु बेस ओर गृहस्थ बेस पेरी के अग्यानी लोग यो केवे हे कि पेरावज मोक्ष को रस्तो हे पन द्रव्यलिंग मोक्ष को रस्तो नी हे क्यों कि अर्हंतदेव सरीर से ममता छोडी के लिंग (चिन्ह) के छोडी के दरसन ग्यान चारित्र के सेवे हे।

१०॥१०३॥४१०, १०॥१०४॥४११

साधु ओर गृहस्थ के लिंग (चिन्ह) ये भी मोक्ष का रस्ता नी हे। दरसन, ग्यान, चारित्र मोक्ष का रस्ता हे असो जिनेन्द्रदेव केवे हे इका लिये गृहस्थ ओर साधुनां से लिया गया लिंगनां के छोडी के अपनी आतमा को दरसन, ग्यान ओर चारित्ररूप मोक्षमार्ग (रस्ता) में लगाओ।

१०॥१०५॥४१२

हे बडा ! मोक्ष का रम्ना में तू अपनी आतमा के स्थापित कर (लोप) उको अनुभव कर ओर उकोज ध्यान कर वांज हमेसा विहार कर, दूसरा द्रव्यनां में विहार मत कर ।

१०॥१०६॥४१३

जो लोग भोत तरे का साधु लिंगना में या गृहस्थ लिंगना में ममता रखे हे उनने समय सार (शुद्ध आत्मस्वरूप) के नी जाण्यो हे ।

१०॥१०७॥४१४

बेवार नीति दोई लिंगनां के मोक्ष को रम्नो केवे हे ओर निश्चे नीति तो सारा लिंगना के मोक्ष का रम्ना में इष्ट (उचित, योग्य, अच्छो) नी माने हे ।

१०॥१०८॥४१५

जो भव्य (वड़ो) आतमा इना समय (प्राभृत के पढ़ी के ओर इको अर्थ (मतलब) ओर तत्व (सिद्धान्त) में जाणी के अर्थभूत शुद्धात्मा में ठेरेगो वो अच्छो सौख्यस्वरूप हुई जावेगो ।

इति श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रणीत "समयप्राभृत"

तिथि श्रावण वदी एकादशी संवत् २०३६
शुक्रवार २० जुलाई १९७९

निरंजन जमीदार साहित्य

१. व्यक्ति-दर्शन

२. डॉ. राधाकृष्णन

३. आधुनिक भारत और गीता

४. राबाजी

५. चीनी हमला

६. बोल्शेविज्म (मूल-बर्ट्रेन्ड रसेल)

७. और क्षिप्रा बहती रही

८. और क्षिप्रा बहती रही (मराठी अनुवाद) श्री श्रीपाद जोशी

९. और क्षिप्रा बहती रही (कन्नड़ अनुवाद) डां. प्रधान गुरुदत्त

१०. श्रीमद् भगवद गीता (मालवी अनुवाद)

११. नीलकंठ (उपन्यास)

१२. यमराज का हृदय-परिवर्तन (हास्य कथा)

१३. Everything for a smile

१४. Cangress refuted,

२५. A Hand book of Modern Hindi literature

१६. समयसार - मालवी अनुवाद